प्रजाकी वृद्धिके साथही इनदेशोंका व्यापारभी बढ़नाही चाहिये। इसका अनुमान करने के दोमार्ग हैं। एक जहाज़ोंकी वृद्धि और दूसरी रेल्वे। सन् १८३७ई० में ग्रेटब्रिटेन में २२ लाख ३३ हज़ार ३०० टन (२८ मनका एक टन होताहै) बोझा ढोनेवाले २० हजार ५०० जहाज थे। इनमेंसे ६२४ ही धूमपोत थे शेष सब पालसे चलाये जाने वाले थे। किन्तु अब इसमें असाधारण उन्नतिहुई है। इस समय इस राज्यके पास व्यापारके कामके ३६ हजार जहाजहैं। इनमें धूमपोतोंकी संख्या अधिकहै। इन जहाजों में १ करोड़ ५ लाख टन बोझा लेजाया जासकताहै। केवल जहाजोंकी उन्नतिसे ही व्यापारकी उन्नतिका पूरा निश्चय नहीं हो सकता है। किन्तु सुइजकी नहर खुलजानेसे बंबईको माल चार मासकी जगह पचीस दिनमें आजाताहै। मेलबोर्न जाने में अब चालीस दिन लगतेहैं और न्यूयार्क (एमेरिका) का माल इंग्लैंड ५ वा ६ दिनमें पहुँचजाताहै। जहाज़ों के मार्गमें सुविधा होकर उनकी वृद्धि होने पूर्व इंग्लैंड आदि टापुओंका माल बाहरको १४ करोड़ जाता आता था किन्तु श्रीमतीके शासनकी समाप्तिके पांच वर्ष पूर्व अर्थात् सन् ९५ ई० में यही व्यापार ७० करोड़ टनका हुआ॥

१०० वर्ष पूर्व ग्रेट ब्रिटेनमें२ करोड२०लाख पौंडका सूत और कपड़ा तैयार होता था। किन्तु अब १७ करोड़का कपड़ा बनता है। इन वस्तुओंके बननेके कारखानोंमें२००करोड़ पौंडकी पूंजी लगी हुई है और कमसे कम२करोड़ मनुष्य काम करते हैं। श्रीमतीके शासनारंभसे पूर्व सन् १८३५ ई० में विलायत में जितने यंत्र चलाये जाते थे उनमें सब मिलाकर ४१ हज़ार घोड़ोंकी शक्ति थी किन्तु अब (१८९०) में १ करोड़ घोडोंकी शक्तिके यंत्र चल रहे हैं। एक घोड़ेमें १६ मनुष्योंके बराबर शक्ति मानी जाती है। नेपोलियनके युद्धके समय इंग्लैंड का परदेशोंके साथ व्यापार ७ करोड़ पौंड का था किन्तु अब (१८९०) ई० में ८१ करोड़ ५० लाख पौंडको पहुंचा। अठारहवीं शताब्दिके अंतमें अंगरेज़ोका सामुद्रिक व्यापार १८ लाख ५६ हंज़ार टन का था किन्तु अब बढ़ते बढ़ते जितना बढ़गया है उसकी संख्या ऊपरके वाक्यमें लिखी गई है॥

महारानीके शासनारम्भमें ग्रेट ब्रिटेनमें केवल छः रेल्वे लाइने थीं। इनमेंसे पांच केवल लण्डन नगरमें आवागमन करती थीं। एकही लाइन ऐसी थी जो लण्डनसे ग्रीन विच तक जाती आतीथी। सन् १८५४ ई०में रेल्वेकी वृद्धिहोकर ८ हज़ार ५३ मील रेल्वे लाइन तैयार हुई किन्तु वही संख्या बढ़ते२ सन् १८९५ई०में२१ हजार १७४ मीलको पहुँची। सन् ५४ ई० में ११ करोड़ ११ लाख ८० हज़ा

१६५ मनुष्योंने और सन् ९५ ई० में ९२ करोड़ ९७ लाख ७० हज़ार ९०९ मनुष्योंने रेल्वेमें यात्राकी ॥

इसके साथ ही खानोंसे भी माल बहुत निकलने लगा है। खानोंके मालमें कोयला मुख्य है। कोयले और लोहेसेही शिल्पकला की उन्नति है। लेखा लगानेसे विदित हुआ है कि अंगरेज़ोंके हाथमें जितनी कोयले और लोहेकी खाने सन् ५४ में थीं उनसे उस समय ६॥ करोड़ टन कोयला और ३० लाख टन लोहा निकला था। उस संख्याकी सन् ९५ई० के साथ तुलना करनेसे आंखें खुलजाती हैं। व्यापारकी वृद्धिका मुख्यमार्ग जानकर इन्होंने दोनों पदार्थोंकी अधिक खोजकी और पचासवर्षके अनन्तर इनको प्रतिवर्ष २० करोड़ टन कोयला और ७५ लाख टन लोहा मिलने लगा। किन्तु इस अवसरमें अन्य २राज्योंमें भी लोहा और कोयला बहुत निकलने लगा है इसलिये अब इन लोगोंका व्यापार इस विषयमें मंदा हो चलाहै। यदि दो पदार्थोंका व्यापार मंदा होतो क्या चिन्ताहै परंतु सोना, चांदी और अन्य २ धातुओंने ग्रेटब्रिटेनके गहरे कर दिये हैं ॥

इंग्लैंडका धन केवल व्यापारकी वृद्धिसेही नहीं बढ़ताहै किन्तु सोना,चांदी और हीरे की खानेभी श्रीमतीके शासनमें उसके हाथ आई हैं।सोनेकी खाने सन् १८४७ई० में केलिफोर्निया, सन् ५१ ई० में आस्ट्रेलिया और सन् १८६८ ई० में दक्षिण एफ्रिकामें प्राप्त हुई हैं। सबही खानोंसे बहुत कुछ सोना निकलनेपर भी सोनेके सिक्केका प्रचार होनेसे उसका मूल्य घटा नहीं है किन्तु श्रीमतीके शासनके आरंभ में चांदीका जितना मूल्य था इससमय उसका आधाहै। इसके कारण येही हैं कि चांदी बहुतायतसे निकलने लगीहै और दिन २ चांदीके सिक्केका प्रचार घटता जाताहै। दक्षिण एफ्रिका में पहले पहल हीरा सन् १८६७ ई० में निकलाथा। तबसे इसका व्यापार दिन २ उन्नति करता जाता है। दक्षिण एफ्रिकामें कई वार अंगरेजोंसे युद्ध होनेका एक कारण सोना चांदी और हीरेकी खानेभीहैं॥

अध्याय २.

वैज्ञानिक उन्नति और आविष्कार ।

जिस समय श्रीमती सिंहासनासीन हुई इंग्लैंडने साइंस की बहुत कुछ पूंजी इकट्ठी कररक्खी थी परंतु उस समय वह पूंजी केवल वैज्ञानिकोंके हृदयमें निवास करती थी।विक्टोरियाके राज्यमें उस पूंजीका व्याज और व्याज काभी व्याज उत्पन्न

होगया। इस विधाने असाधारण उन्नति की । उस समय और इससे पूर्व विज्ञानपर विचार करनेवाले थे किन्तु अब इंग्लैंडमें हजारों मनुष्य साइंसके अनुसार कामकरनेवाले उपस्थित हैं। यह इस विज्ञानकाही प्रतापहै कि लोग सृष्टि की बनावट जानने लगे हैं, समुद्रमें धूमपोत फिर रहे हैं, उसकी गहराई माप ली गई है आकाशका मानचित्र तैयार है, मनुष्य पशु पक्षी और बनस्पतिकी जांच होचुकी है ॥

साइंसके बलसे सर विलियम कूक और सर चार्लेस व्हीटस्टोनने चुंबककी सुई जिससे तार चलाया जाता है निकाली । इसका आविष्कार सन् ३७ में हुआ था । बिजलीके तारका सन् ३८ में प्रचार हुआ। तबहीसे धीरे२ संसारभर में तारका जाल छागया। तारके भाई टेलीफोनके द्वारा अब लण्डन और पैरिस में बातचीत होसकती है इससे व्यापारियोंको बहुतही लाभ पहुंचा है यद्यपि फोटोग्राफीका आविष्कार विक्टोरियाके शासनसे पहलेही होचुका था किन्तु वर्त्तमान ढंगकी चित्रविद्या जिससे बातकी बातमें फोटो तैयार होजाता है श्रीमतीके शासनमेंही प्रकट हुई है । इसका आरम्भ इंग्लैंडमें प्रथमवार सन्१८३९ ई०के सितम्बरमें हुआ था। फोटोग्राफीसे बढकर भी 'एक्स रेज़्' का आश्चर्य है। यह सूर्यकी किरने हैं जिन्हें यंत्र द्वारा एकत्रितकर उनसे मनुष्यके शरीरके भीतर की हड्डियां और मांस मज्जा रोग इत्यादिका चित्र उतारा जाता है । इस शासन में बिजली और वाष्पने असाधारण उन्नति की है ॥

हैजा, क्षय और प्लेगके रोगोंकी औषधियां इसीसमयमें निकलीं, जंतुविद्या, बिजलीकी शक्तिसे कलें चलाना, कोयलेके बदले केरोसिन तेलका जहाजोंमें ईंधन, आक्सीजन वायुको द्रवीभूत करना, बिना घोड़ेकी बाइसिकिल गाड़ियां तैयार करना आदि इससिमय प्रचलित हुआ ॥

महारानीके शासनकालमें लिविंगूस्टन, स्टैनली और बेकरने एफ्रिकाकी बड़ी२ नदियां और झीलोंका पता लगाया । एशिया माइनरमें और मिसरमें भूमिमेंसे एसीरिया और बेबीलियन नगरका पता लगा और टेल एम्रानमें इब्राहीमके समयका शिलालेख मिला । पहले जिन २ वस्तुओंका आविष्कार होचुका था उनका नये ढंगसे संस्कार हुआ और रेल्वेकी गति पहलेसे दुगुनीसे अधिक होगई ॥

बिना धुऐंका बारूद और बिना तारका तार श्रीमतीके शासनके अन्तिमकाल के आविष्कार हैं । साइंसने श्रीमतीके शासनमें कितनी उन्नतिकर प्रजाका क्या२ उपकार किया है उसका दिग्दर्शन मात्रभी इस अध्यायमें नहीं होसकताहै ।

इस विषयमें स्वतंत्र पुस्तक बननेकी आवश्यकता है और वही साधारणके उपयोगी होसकती है। श्रीमतीके शासनमें जो मुख्य२ आविष्कार हुए उनके विषयमें अन्यत्र लिखा गया है । उसे पढनेसे इसका कुछ २ हाल पाठकोंको विदित होगा ॥

अध्याय ३.

प्रजाकी दुर्दशासे सुदशा ।

श्रीमतीके शासनमें इंग्लैंडके आईनका बहुत कुछ सुधार और जातीय कष्टमें न्यूनता हुई है। राज्यके आरम्भमें किसानोंकी बहुत दुर्दशा थी । हज़ारों खेतिहर भूखके मारे मर जाते थे । उनके मुखमलिन और आपत्तिग्रस्त थे । हर जगह असंतोष फैला हुआ था । राजद्रोही लोग राज्यतंत्र प्रणालीको उठाकर प्रजातंत्र राज्य स्थापन करना चाहते थे । वे सब नष्ट होगये । देशमें शांति स्थापित हुई और प्रजाके हृदयमें राजभक्ति दृढ होगई ॥

इस परिवर्त्तनसे देशका धन बढ़ा और दुःखदायी नियमोंका संशोधन हुआ ! पहले मिलवाले पांच २ छः २ वर्षके बालकोंसे दिन रात परिश्रम करवाते थे और उन्हें वेतन बहुत थोड़ा देते थे । श्रीमतीके शासनमें यह प्रथा उठगई और पार्लियामेंटने काम करने वालोंके घंटे नियत कर दिये । श्रीमतीका जिस समय शासन आरम्भ हुआ उधार देनेवाला साहूकार अपने रुपयेके लिये असामीको अपने घरमें कैद कर रखता था और उसे मनमाना कष्ट देकर अपना रुपया लिया करता था । विक्टोरियाके शासनने दीन प्रजाको इस निर्दयताके चंगुलसे बचा लिया । अब कोई भी मनुष्य एक सेकंडके लिये किसीको नहीं रोक सकता है और इग्लैंडमें अपराध बताये विना स्वयं गवर्नमेंट तक किसीको नहीं पकड़ सकती है । सन् १८३७ ई० तक यह नियम था कि यदि कोई मल्लाह ठीक २ काम न करता तो जहाज़का कप्तान उसकी कोड़ोंसे खबर लिया करता था । इनका डर इतना भारी था कि भूखोंके सिवाय और कोई मल्लाही करना पसंद नहीं करता था । श्रीमतीके शासनमें यह नियम उठगया और अब इस कारण अंगरेज़ मल्लाहोंका मुख हर्षित और शरीर दृढ़ दिखाई देता है । इंग्लैंडकी यावत् करद प्रजाको पार्लियामेंटमें मेम्बर चुननेके लिये 'वोट' देनेका अधिकार है परन्तु इस कार्यकी योग्यता विद्याके विना नहीं होसकती इसलिये शिक्षा संबंधी आईनने पास होकर घर २ पढ़े लिखे करडाले । समाचार पत्रोंपर से कर उठा

लिया, उन्हें आधिक स्वतंत्रता मिली और इससे पुस्तकें और प्रेस सस्ते होगये। जहां तहां पुस्तकालय देख पड़ने लगे। 'कार्नला' के उठजाने और 'पुअरला' के संशोधनसे बाहरका अन्न स्वतंत्रतापूर्वक ग्रेटब्रिटेनमें आनेलगा और इसकेद्वारा लोगोंको भरपेट रोटी मिलना नसीब हुआ। डाकमहसूल घटगया। कपड़े सस्ते मिलने लगे। लोगोंको रहनेके स्थान बढ़ियासे बढ़िया मिले और भाड़ा सस्ता होगया पुराने ढंगके व्याज की कड़ाई घटगई और संगीत विद्या और साहित्यकी उन्नति हुई। इन्हीं कारणोंसे देशका दरिद्र दूर होगया॥

अध्याय ४.

विद्या और साहित्यकी उन्नति।

जिन लोगोंको इंग्लैंडके प्राचीन साहित्यके अवलोकनका काम पड़ाहै और जो विक्टोरियाके शासन पूर्वके साहित्य और विद्याओंकी आज कलके साथ तुलना करते हैं वे जानते हैं कि अंगरेज़ीने असाधारण उन्नति की है। जबतक इंग्लैंडके निवासी देश छोड़कर अधिक तर उपनिवेशों और एशिया, एफ्रिका तथा एमेरिका के भिन्न २ स्थानोंमें निवास नहीं करने लगे थे यूरोपकी राजकीय और जातीय भाषा फरांसीसी मानीजाती थी। फरांसीसी भाषा अब भी मधुर और आदरणीय समझी जाती है परन्तु इससमय अंगरेजी साहित्य उन्नतिके शिखरपर पहुंचा हुआ है। बिजलीकी तरह मनुष्यके हृदयमें प्रविष्ट होकर उसनें भूमंडल भरको व्याप्त करलिया है। आजदिन अंगरेज़ी ही भूमंडलकी एक भाषा जिसे अंगरेज़ीमें (Uniuvrsal language) कहते हैं कहलाने योग्य है॥

विक्टोरियाके राज्यारंभके समय इंगलिश भाषाका भंडार सब विषयोंसे भरपूर नहीं था। अंगरेज़ोंको साहित्य, कला, और विज्ञानके लिये अन्य भाषाओंका आश्रयलेना पड़ता था। इस समय संसारमें ऐसी कोई विद्या नहीं है जिसके विषयमें अंगरेज़ीमें पुस्तक विद्यमान न हो। और वह पुस्तक भी ऐसी वैसी नहीं किन्तु उस विषयके सब अंगोंसे भरपूर। अंगरेज़ोंने इस शासनमें नवीन पुस्तकोंकी रचनामें जितनी उन्नति की है उतनी ही संस्कृत फारसी अरबी हेब्रू आदि भाषाओंके उत्तमोत्तम ग्रंथोंका भाषान्तर किया है, उनपर अपने विचार प्रकट किये है, और उनसे सिद्धान्त निकालकर हिन्दीकी चिन्दी बनाई है। संस्कृतके वेद और पुराणोंसे लेकर साधारण किस्से कहानी तकका अंगरेज़ी

भाषान्तर हो चुका है । अंगरेज़ी भाषान्तरोंको देख २ करही आज कलके नव-शिक्षित भारत वासी अनुमानके घोड़े दौड़ाते हैं॥

इंगलैंडमें प्रजामतका कैसा भी प्राबल्य हो किन्तु वहांके विषयमें "राजाकालस्य कारणम् " यह लोकोक्ति चरितार्थहोती है । श्रीमतीको विद्वानोंकी सहायता, शिक्षाके प्रचार और उत्तेजनाके अतिरिक्त स्वयं पुस्तकोंकी रचना करनेमें अनुराग था । उन्होंने 'स्काटलैंडका प्रवास ' और ऐसीही अनेक पुस्तकें बनाई थीं और पतिका चरित्र बनानेमें सर थियोडोर मार्टिनको लेख संबंधी सहायता दी थी । उन्हींके समयमें इलिजा बेथ, ब्रौनिंग्,ज्यार्ज इलियट और चार्लोट ब्रोंटी जैसे लेखक, कार्लाइल और स्टुअर्ट मिल जैसे साहित्याचार्य, हर्बर्टस्पेंसर जैसे फिलोसोफ़र, सौथी, वर्डसवर्थ, टेनीसन, आस्टिन ब्रौनिंग्, स्विनवर्न और लार्ड लिटन जैसे कवि, रुडयार्ड किपूलिंग् जैसे विद्वान, अर्नोल्ड और रस्किनके समान समालोचक, लार्डमेकाले जैसे इतिहास वेत्ता मेकपीस, थेकरी, डिकन्स, किंग्सली, स्टिविन्सन और मेरेडिथ जैसे उपन्यास लेखक हुए हैं ॥

अध्याय ९.

ब्रिटिश राज्यका विजय ।

महारानीके शासनमें अंगरेज़ी राज्यने किस २ राज्यसे युद्धकर विजय पाया है इस बातका निश्चय अन्यत्रके लेखसे होगा । किन्तु उन सब घटनाओंको इकट्ठी करके यहां दिखलानेसे विदित होता है कि श्रीमतीके शासनमें ब्रिटिश राज्यने कितने युद्धजीते हैं । श्रीमतीके शासनमें जल सेनामें असाधारण वृद्धि हुई।इससे पूर्व इंग्लैंडने जल युद्धमें कहीं विजय नहीं पाया था । इनके शासनमें निरंतर विजयहुआ । नील और ट्राफ़लगरके सिवाय कहींपर भी बिदेशी जलसेना ब्रिटिश सेनाके सामने टिक न सकी । समोआकी प्रचंड आंधी अनेक जर्मन और एमेरिकन धूमपोतोंको नष्ट कर चुकीथी उसीमेंसे "केलियपू" नामक ब्रिटिश जहाज बचआया ॥

विक्टोरियाके शासनारंभमें इंग्लैंडके सैनिक जहाजोंमेंसे अधिकतर पाल वाले जहाज थे । इनमें उन पोतोंकी संख्या अधिक थी जिनको अंगरेज़ोंने फ्रांस, स्पेन, डेनमार्क, और होलेंड वालोंसे छीने थे । किन्तु दिन २ धूमपोतोंकी संख्या बढकर डायमंडज्यूबिलीके समय जो क़वाइद हुई उसमें १६६ सैनिक जहाज़ोंकी

संख्या गिनीगई थी। इनके खड़े होनेमें सातमील समुद्र रुंधगयाथा। ब्रिटिश जल सेनाने केवल अपने मान और देशकी रक्षाही नकी बरन अल्मा, बलकलावा इंकमैंन, सेवस्टापूल (क्रीमिया) दिल्ली, लखनऊ और कान्पुरमें विजयपाया॥

श्रीमतीके शासनके दूसरे वर्षसे लेकर अबतकमें अंगरेज़ी सेनाको तीन युद्ध काबुलमें करनेपड़े जिनमेंसे अंतिम युद्धमें लार्ड रावर्ट्सने असाधारण विजयपाकर काबुलकी प्रजाके हृदयमें वीरोचित स्थानपाया। अंगरेज़ीसेना सिक्खोंसे,चीनियोंसे,भुटानियोंसे काफ़िरों,मावरियों, ज़ुलूलोगों बाज़ोरियों, लुशाइयों,और अनेक पहाड़ी जातोंसे लड़ी और चित्राल और सीमाप्रान्तके अफरीदियोंसे विजयपाया। ब्रिटिशसेनाके बलसे केनेडाका विजयहुआ और ब्रह्मदेश अंगरेजोंके हाथआया अंगरेजी सेनाने दो बार कुमासीको जीतकर मगद्दलामें अपना झंडा जाजमाया। उसने नाइगर जैसी जंगली जातिको अपने वशमें किया, मिसरके उपद्रवियोंका दमनकर और सोडानके खलीफाको परास्त कर एकवार फ्रासको फसौड़ामें नीचा दिखाया। और आमेरडममें अपना झंडा जा उडाया॥

अंतमें ट्रांसवालके युद्धमें जो सन् १८९९–१९००ई० में हुआ बहुत कुछ कष्टसहने और हज़ारों मनुष्योंको खोने उपरांत लेडीस्मिथ मेफकिंगू और किम्बर्लीको बोरोंसे छुडाया, बीरबोरोंकोक़ैद किया और अंतमे ट्रांसवालसें विजय पाया। और आशाहोतीहै कि वहांका रहासहा बखेड़ा मिटकर कुछ वर्षोंमें शान्ति होजायगी॥

अध्याय ६.

वाष्प और बिजली।

श्रीमतीके शासनमें प्रजा और राज्यकी उन्नति करनेके काममें बाफ और बिजलीने बहुत सहायता दी। पूर्व छः सौ वर्षकी अपेक्षा श्रीमतीके शासनके तरेसठ वर्षमें इन दोनों पदार्थोंने अंगरेज़ोंकी बहुतही सेवाकी। इन दोनोंके द्वारा समय और द्रव्यका बहुत बचावहुआ। जिस कार्यके करनेमें बरसों लगते थे वह अब दिनोंमें हो जाता है। इनसे मार्ग ओछा होगया और अब प्रजा ऐसी स्थितिपर जा पहुंची कि एक मनुष्य देशांतरोंमें भ्रमण कर पीढियोंमें जितना अनुभव प्राप्त नहीं करसकता था वह दिनोंमें संपादन हो जाता है। यद्यपि धूमपोत चलानेमं पहले भी कुछ २ सफलता प्राप्त हो चुकी थी किन्तु सबसे प्रथम जहाज़

श्रीमतीके राज्यारंभके वर्षमें ही यूरोपसे एमेरिकाको भेजा गया था। वह जहाज़ बहुत छोटासा था। उसकी लंबाई केवल २१३ फुट और बोझा २३०० टन था किन्तु अब उससे चौगुने पचगुने जहाज़ अटलांटिक जैसे महासागरको पारकर जाते हैं। नौका वाहनकी उन्नतिसे एटलांटिक महासागर साधारण तलैयाके समान होगया। इसके लिये सन् १८४०ई० में इंग्लैंडमें केवल ६०० धूम नौकायें थीं किन्तु आज दिन ८५०० से अधिक हैं। जहाजों और रेल्वेकी उन्नतिके विषयमें इस भागके प्रथम अध्यायमें कुछ लिखा गया है। सन् १८४२ ई० तक श्रीमती एक पैंड भी रेल्वे यात्रा करनेमें असमर्थ थीं और अवर्डीनसे बाल मोरल जानेमें पैंतालीस घंटे लगते थे किन्तु अब५४० मीलकी यात्रा केवल १२ घंटेमें हो जाती है॥

यही दशा बिजलीकी है। बिजलीसे तार टेलीफोन, फोनोग्राफ़, रोशनी और इसी प्रकारके अनेक आविष्कारोंका अधिक भाग श्रीमतीके शासनसे संबंध रखता है। उन्हींके राज्यमें बिजलीने यूरोपियन लोगोंकी नौकरनी की तरह सेवा की है॥

जहाज रेल्वे और तारसे यह भूमंडल यूरोपियन लोगोंके लिये विक्टोरियाके ही शासनमें हस्तामलक हुआ है। विक्टोरिया ही के राज्यमें इस भूगोलको विद्यार्थियोंके 'भूगोल' की तरह अंगरेज़ोंने अंगुल २ देख डाला है। और श्रीमतीके समयमेंही इस पृथ्वीपर अंगरेज़ोंका इतना राज्य फैला है जिसमें सूर्यके अस्त-न होनेकी उपमा दी जाने लगी है॥

अध्याय ७.

भारत वर्षकी उन्नति और परिवर्त्तन।

श्रीमतीके शासनके तरेसठ वर्षमें भारत वर्षकी कितनी उन्नति अवनति हुई और क्या२ परिवर्त्तन हुआ-इस बातका पूरा विवेचन इस एक ही अध्यायमें नहीं हो सकताहै। यह कार्य उसी समय सांगोपांग होसकताहै जब कि इस विषयमें एक स्वतंत्र पुस्तक लिखीजाय। मुझे इसपुस्तकमें श्रीमतीके शासनकी सब बातोंका दिग्दर्शन करनाहै इसलिये इस विषयको यहांपर मैं विस्तारपूर्वक नहीं लिखसकताहूं। भारत वर्षमें अंगरेजोंका साम्राज्य स्थापित होनेसे पूर्व लूट खसोटका बड़ा ज़ोर था। देशी राजाओंमें परस्पर युद्धका बाज़ार गर्मथा। दिल्लीके सिंहासनपर एकको मारकर दूसरा बादशाह बननेकी कामनासे लड़ता झगड़ताथा। जगह२ मारकाट होकर प्रजाके

सुखका कुछ प्रयत्न नहीं किया जाताथा। डाकू लुटेरे और बाहरी आक्रमणसे प्रजा थर थर कांपती रहती थी। किसीको अपने प्राण, धर्म और धनकी रक्षाका कहींसे सहारा न था। ब्रिटिश शासनसे धीरे २ यह भय जातारहा। जिस शांतिका बीज महारानीके शासनारंभसे पूर्व डाला गया वा डालाजाने वाला था उससे वृक्ष उत्पन्न होकर पल्लवित और फलित होगया। जहां एक समय एक शस्त्रधारी समुदायभी शांति पूर्वक यात्रा कर लुटेरों और डाकुओंसे बचनेकी आशा नहीं रखता था वहां अब एक बुढियाभी सोना उछालती चली जानेमें हिचकती नहीं है। सीमाप्रान्तकी जंगली जातोंसे इस देशकी साधारण प्रजाको जो रात दिन भय बना रहता था वह दूर होगया। पश्चिमोत्तर सीमा प्रदेशकी प्रजा चाहे जैसी कट्टर क्यों नहो और उसे दमन करने में सरकारको कैसा भी कष्ट क्यों न उठाना पड़ै परंतु अब किसीकी सामर्थ्य नहीं है कि प्रजाकी ओर आंख उठाकर देखसके॥

रेल और तार तो एक ओर रहा किन्तु उससमय सड़कका नामभी कोई नहीं जानता था और न यात्रियोंकी सुविधाका कोई उचित प्रबंध था। भारत वर्ष जैसे एकही देशमें बसकर, और एकही धर्मकी अनुयायी होनेपर भी इस देशके एक प्रान्तकी प्रजा दूसरे प्रान्तके रहन सहन और स्थितिसे बिलकुल अन-भिज्ञ थी। उत्तरसे दक्षिण और पश्चिमसे पूर्व भागको जाने में असंख्य रुपया खर्च होने उपरांत कई महीनोंमें अनेक कष्ट सहकर जैसे तैसे यात्रा हो सकती थी। और जो मनुष्य चारों धामोंमें से एकभी यात्राकर आता था वह धन्य समझा जाता था। केवल इतनाही नहीं बरन घरसे निकलते समय मनुष्य अपने घरवालोंको और घरवाले उसे मराहुआ समझ लेते थे। वहाही अब इने गिने दिनों में भारतके एक छोरसे दूसरे छोरतककी यात्रा निश्चिन्ततासे कर सकता है। उस समय मनुष्यको घरसे बाहर जाना जितना कठिन था उतनाही: अब हँसी खेल होगया है। उस समय एक प्रान्तकी उपज और कारीगरीके पदार्थके लिये दूसरे प्रान्तवाले तरसते थे। उसेही अब वे लोग रेल और डाकके द्वारा घर बैठे पासकते हैं॥

अंगरेज़ों के राज्यसे पहले इस देशमें डाकका कोई योग्य प्रबंध न था। ब्रिटिश शासनका आरंभ होकर शांति स्थापन होनेके अनन्तर डाक विभाग स्थापित होनेपर भी देशियोंके लिये किसीप्रकारका सुविधा न था। आरंभमें डाककी

चिट्ठियोंपर महसूल मीलके हिसाबसे लगता था और प्रत्येक चिट्ठीका महसूल आ आनेसे कम न था। महारानीके शासनमें डाक विभागका बिलकुल काया पलट होगया। अब पत्र, पारसल, रजिस्टरी, बीमा, मनीआर्डर और वेल्यूपेबिलके प्रचारसे प्रजाका दुःखदूर होकर सरकार और प्रजाका बहुत लाभ हुआ और दिन २ इसकी उन्नति करनेका प्रयत्न किया जा रहा है। इसी तरह तार विभागकी उन्नतिसे भी देशका बहुत उपकार हुआ॥

हिन्दुओंके आयुर्वेदमें स्वास्थ्य रक्षाके जो नियम लिखे हैं वे इस देशवासियोंकी प्रकृति और जल वायुके अनुकूल हैं परंतु सैकड़ों वर्षोंतक अशांति रहने और शिक्षा कम होजानेसे इस देशकी अधिकांश प्रजाने उनपर ध्यान देना छोड़ दिया था। प्रजाकी धर्मार्थ चिकित्सा करनेका कोई उचित प्रबंध न था। महारानीके शासनमें सरकारने इन बातोंपर बहुत ध्यान दिया। संक्रामक और दूसरे रोगोंसे बचानेका प्रयत्न कर स्थान २ पर अस्पताल स्थापित किये। और चाहे इस देशकी प्रजाकी प्रकृति और जल वायु तथा धर्मके डाक्टरी चिकित्सा अनेक अंशोंमें प्रतिकूल हो परंतु दीनसे लेकर धनवान् तकके लिये स्वतंत्रतासे चिकित्सा करवानेका मार्ग खुल गया। प्रजाको अनायास अस्पतालोंमें दवा मिलनेसे लोगोंने देशी वैद्यकसे उपेक्षा की और इसका यह फल हुआ कि एक योग्य और उपयोगी शास्त्र धीरे २ लोप होता जाता है। और दीनता तथा योग्य भोजन न मिलने और असंयमकी वृद्धिसे लोगोंकी शक्ति घटती जातीहै। इसीका यह कारण है कि पहलेकी अपेक्षा अब भारतवासी दृढ कम होते हैं, रोगी होते हैं और जीते कम हैं॥

ब्रिटिश राज्यके भारतमें स्थापित होनेसे पूर्व यहांपर कपड़ा आदि सब पदार्थ हाथसे बनाये जाते थे। उस समयके कारीगर इस कार्यमें बड़े निपुण थे। इनकी बनाई वस्तुओंसे उस समय केवल देशका कामही नहीं चलता था बरन यहांका बना माल परदेशोंमें जाकर बहुत आदर पाता था। अब हाथके कामका स्थान कलोंने लिया। दस्ती कारीगरी धीरे २ नष्टप्राय होगई। देशमें विलायती ढंगपर माल तैयार करनेके लिये कल कारखानोंकी योजना हुई। इस कार्यने भी बहुत शीघ्र उन्नति की और थोडेही समयमें विलायतके ढंगपर कपड़ा आदि अनेक तरहका सामान भारत वर्षमें बनने लगा। इस कार्यकी यद्यपि वृद्धि होती है परंतु प्रजाकी ओरसे आश्रय न मिलने और कारख़ानोंपर टैक्स लगजानेसे अब शिथिल हो गया है। और इसी कारणसे देशीकारीगरी धीरे २ रसातलको चली जा रही है॥

साठ वर्ष पहले इस देशमें भूमि बहुत कम जोती बोई जाती थी परंतु उसमें उपजाऊ शक्ति बहुत थी । इस कारण थोड़ी भूमि जोतनेपर भी अन्न इतना अधिक उत्पन्न होता था कि जिससे केवल भारतवर्षका निर्वाह होने उपरान्त व्यापारियों की खत्तियां भरी रहा करती थीं और अकालके समय वही अन्न सहायता देता था । अब उतना अन्न चप्पा २ जमीन जोतनेपर उत्पन्न होता है । उपजका अधिक भाग विदेशको चला जाता है । इसके साथही अफ़ीम रुई और नीलकी खेतीभी बहुत होती है । प्रायः ये तीनोंही पदार्थ परदेशको जाते हैं । और यहींकी रुईसे विलायतमें जो कपड़ा बनता है वह इस देशवालोंके शरीरको ढांकता है । इसके अतिरिक्त देशी कारीगरीके नष्ट होजाने और परदेशी मालके चाकचक्य-पर प्रजाकी रुचि बढ़नेसे दिन २ बाहरका माल यहां आकर अधिक २ बिकता है और सौ वर्ष पहले भारतवर्षका बना पदार्थ परदेशके बाज़ारोंमें जितना आदर पाता था उससे कहीं बढ़कर विलायती मालका भारतवर्षमें इस समय आदरहै । भारतवर्षके व्यापारी आढ़त और सट्टेमें लगे हुए हैं और देशका व्यापार धीरे २ परदेशियोंके हाथमें चला जाता है । नील और ईखकी खेतीका काम अब यूरो-पियन लोग भारतवर्षमें करने लगे हैं और चायकी खेती भी बहुत होनेलगीहै ॥

यद्यपि श्रीमतीके सिंहासनपर विराजने पूर्व इस देशमें शिक्षाविभागका जन्म होगया था और कहीं २ पाठशालायें भी स्थापित हुई थीं परंतु श्रीमतीके शासन में गाँव २ पाठशाला होगई । अंगरेज़ी भाषाने इस देशमें बहुत उन्नतिपाई । देशी भाषाओंने भी थोड़ेही कालमें बहुत कुछ उन्नति कर दिखाई और जहां अंगरेज़ी वा देशभाषामें पत्र लिखनेके लिये ढूंढनेपर कठिनता से मनुष्य मिलता था वहां हज़ारों लाखों विद्वान् देख पड़ने लगे । विद्वानोंकी वृद्धिसे देशकी दशा सुधरनेकी आशा करना चाहिये था परंतु प्रचलित शिक्षाप्रणाली उच्च कक्षामें पहुं-चने परभी विद्यार्थीको पाठशालाओंमें मास्टरी और दफ्तरोंमें क्लर्की करनेके सि-वाय और किसी प्रकारकी शिक्षा नहीं देती है इस लिये देशको इसप्रकारके विद्वानोंसे ऊब होगई और नानाप्रकारके पेशेवालोंके अपना पेशा छोड़कर अंगरेज़ी पढनेके कारण पढ़े लिखे मनुष्योंकी बहुतायत होकर विद्वान् सस्ते होगये । किन्तु साथहीमें ब्रिटिश गवर्नमेंटकी कृपासे देशभाषाओंकी भी बहुत उन्नति हुई और दिन २ होती जाती है । श्रीमतीके शासनमें कई एक विश्व विद्यालय स्थापित होकर विद्योपार्जनकी शृंखला बँधगई ॥

पाठशालाओंके स्थापित होने पूर्व संस्कृतका प्रचार देशमें घट गया था। बहुतही थोड़े मनुष्य संस्कृतको पढ़ते थे । परंतु उस समयके पढ़ने वालोंमें विद्वान् अधिक

होते थे। सरकारने अंगरेज़ी और देश भाषाओंके साथही संस्कृत शिक्षा का भी प्रचार किया परन्तु पाठशालाओंमे इसकी पढ़ाई कमहोनेसे पूर्ण विद्वान् होनेके बदले "पल्लवग्राह पाण्डित्य"को चरितार्थ करनेवाले संस्कृतज्ञ बहुत बढ़गये। और हिन्दी पद्यका यद्यपि बहुत कालसे प्रचारथा परन्तु वर्तमान स्थितिके पद्यने महारानीके राज्यमे जन्मलेकर ठीक २ उन्नति की और चाहे इसकी अन्यभाषाओंके समान वृद्धि न हुई हो परन्तु दिन २ हिन्दीका झुकाव उन्नतिकी ओर बढ़ता जाता है ॥

देशभाषा, अंगरेज़ी और संस्कृतकी उन्नतिमें मुद्रालय बहुत सहायक हुए। महारानीके शासनके अंतिम भागमें इसदेशकी प्रजाने पुस्तकें मुद्रित करानेके लाभोंको अच्छीतरह जानलिया और भिन्न २ भाषा और विषयके अनेक अच्छे और बुरे ग्रंथ मुद्रित होकर देशियोंकी इस ओर रुचिबढ़ी और साथही सर्व साधारणको पुस्तकें सस्ती मिलने लगीं। और इसके द्वारा अनेक अलभ्यग्रंथ सुलभ होगये। श्रीमतीके शासनमेंही अंगरेज़ीके सिवाय देशभाषाओंके सैकड़ों समाचार पत्रोंका जन्म हुआ। और उन्होंने अपनी उन्नति कर राजाकी और प्रजाकी बहुत सेवा की। और अबभी कररहे हैं ॥

मुसलमानों के राज्यमें हिन्दू स्वतंत्रता पूर्वक अपने धर्म संबंधी कार्य नहींकर सकतेथे। और उन्हें करोंसे और दबावसे इसकार्यसे रोका जाता था। ब्रिटिशराज्य और विशेष कर महारानीके शासनने इसदेशकी भिन्न २ जातों को अपने धर्म और समाज संबंधी कार्यों में स्वतंत्र कर दिया। और किसीके धर्ममें हस्ताक्षेप न करनेकी नीतिका दृढ़ प्रचारकर सबको अपने २ धर्मकी उन्नति करनेका अवसर दिया। श्रीमतीके राज्यमें हिन्दुओं और मुसलमानों में कई एक नवीनमत स्थापित हुए और प्राचीन मतवालोंने अपनी २ उन्नतिका प्रयत्न किया। परन्तु पाश्चिमीशिक्षा और नीतिके प्रभाव तथा योग्यशिक्षाके अभावसे प्रजाकी रुचिका अनेक अंशोंमें धर्म तथा सामाजिक विषयोंमें परिवर्त्तनहोगया और शिक्षित लोग अपनी प्राचीन प्रणालीको अनुचित बतलाकर पश्चिम वालोंका अनुकरण करनेपर उतारू हुए। परन्तु साथही में प्राचीन धर्म और रीति से प्रेमरखने वाले लोगों ने और विचार शील यूरोपियनों ने हिन्दू धर्म का महत्व समझाकर उन्हें पश्चिमकी ओर बढ़ने से रोक दिया और इसका फल यह हुआ कि, उनकी दृष्टि में शनैः २ हिन्दुओंके धर्म तथा नीति का महत्व सत्यप्रतीत होनेलगा ॥

हिन्दुओंके घरमें धर्म और नीति शिक्षाका अभाव होनेसे और पाठशालाओं में इसप्रकारकी शिक्षा न पाकर देशियोंके आचरणमें प्रायः अंतर आगया और जो लोग

देशोन्नतिका भार अपनेऊपर लेनेके योग्यथे उनमें और उनकी देखा देखी अशिक्षितों वा अर्द्ध शिक्षितोंमें अंगरेज़ोंके उद्यम, स्वदेशप्रेम आदि गुणग्रहण करनेके साथही मद्यादि दुर्गुणोंने भी प्रवेश करदिया और धर्मकी कुछ पर्वाह न कर जो लोग विदेश पढ़नेके लिये गयेथे उनमेंसे कईएकने पश्चिमी चाकचक्यसे मोहित होकर मेंमों से विवाह किया। इसशासनमें भारतवासियोंके विलायत जानेका फाटक खुलताजाताहै और सैंकड़ों ही मनुष्य वहांसे विद्योपार्जन कर देशके अनेक अंशोंमें कामआये परंतु भेड़िया धसानने यहांभी भारतका पीछा न छोड़ा। इनलोगों में बैरिस्टरीकी ओर रुचिबढ़कर इनका बाज़ार सस्ताहोगया । परंतु साथही विलायत न जाकर, भारतमें आईन पढ़नेके लिये कालेज खुलनेसे देशी वकीलभी बहुत होगये और कहीं २ इनके बाहुल्यसे ऊबभी देखनेमें आई ॥

पाठशालाओमें उच्चशिक्षा प्राप्तकरनेसे देशियोंने जानलिया कि ब्रिटिश नीति के अनुसार और महारानी के ढिंढोरे और प्राचीन आईनसे राज्यप्रबंधके कामोंमें हमारा कितना स्वत्वहै, प्रबंध सुधरवानेके लिये हमें किसप्रकारका आन्दोलन करना चाहिये और देशोन्नति क्योंकर होसकती है । अनेक बर्षों के आन्दोलनके पश्चात् इसी उद्योगसे भारतवासियोंने नेशनल कांग्रेसकी सृष्टिकी । इससे यद्यपि प्रकृत लाभ न हुआ परंतु सब प्रान्तोंके लोगोंमें एकता बढ़ी और अनेक अंशों में किसी न किसी प्रकारपर सरकारने उनकी प्रार्थनापर ध्यानदिया । इस देशमें 'लोकल सेल्फ गवर्नमेंट' अर्थात् आत्मशासन प्रणालीका आरंभ हुआ और देशियोंको प्रबंध और न्याय विभागमें उच्चपद मिलनेलगे । इसके सिवाय एक बहुत बड़ा कार्य यह हुआ कि गवर्नमेंटने आईन बनानेवाली सभाओंमें देशी मेंबरोंके चुननेका प्रजाको स्वत्वदिया और समय २ पर देशीलोग प्रबंधकी त्रुटिपर सरकारका ध्यान आकर्षित करनेलगे । यह महारानीके शांतिमय शासनका परिणाम है । इससमय इतना भी लिखना आवश्यकहै कि पश्चिमी शिक्षासे देशियोंने जितना आंदोलन करना सीखा उतना वास्तविक उद्योगपर ध्यान नदिया और देशोन्नतिके लिये सरकारसे प्रार्थना करनेके साथही देशी कारीगरीकी उन्नति और व्यापारकी वृद्धिके लिये जिन कामोंको वेलोग स्वयं कर सकतेहैं उनपर उपेक्षा करने और सरकारके उत्तेजना वा सहायता न देनेसे देशकी कारीगरी दिन २ नाशहोती जातीहै । और इसके साथही सरकारी लगानकी अधिकता, करोंकी वृद्धि, फसलोंके बिगड़ने और देशियोंका खर्च बढ़जानेसे दिन २ भारतवर्ष दरिद्री होत जाताहै । इसका प्रत्यक्ष प्रमाण गतवर्षोंके अकालहैं इन बातोंसे निश्चय होगया है कि भारतवर्षमें अन्नका अकाल नहीं किन्तु रुपये

का अकाल है और यही सुकालके समय महँगी रहनेका कारण है। श्रीमतीके शासनारंभमें अकालके समय अन्नका जो भाव रहताथा वह भी अब सुकालके समय नही रहता है ॥

इन सब बातोंपर ध्यान देनेसे निश्चय होता है कि श्रीमतीके शासनमें देशकी जितनी उन्नति हुई है उतनी अवनति भी हुई है परंतु इसमें अधिक तर दोष देशियोंका है। सरकारकी नीति और प्रबंध उन्हें अपने धन, धर्मकी उन्नति करनेमें किसी प्रकारकी बाधा नहीं डालते है और अनेक वर्षोंकी शांति उन्हें उत्तेजना देती है कि वे अपनी उन्नतिके लिये सरकारके आईनकी सीमामें रहकर उद्योग करैं। यथावश्यक न्यायालयोंके स्थापित होनेसे प्रजाको अन्याय और अत्याचारियोंसे बचनेका अच्छा अवसर मिलता है और एक दीन मनुष्य बड़ेसे बड़े अधिकारी और धनाढ्यपर नालिशकर न्याय पा सकता है परंतु इसके साथ ही लोगोंमें मुकद्दमे बाज़ीका चसका बढ़ता जाता है। इस समय यह भी लिखना आवश्यक है कि सरकारी सेना और पुलिससे देशकी शांतिकी जैसे रक्षा होती है और यूरोपियन तथा देशी कर्मचारी जिस तरह सुप्रबंध कर प्रजाका उपकार करते हैं उसी तरह इनके हाथसे अत्याचार भी बहुत होंते हैं परंतु जहां तक बन पड़ता है सरकार प्रजाकी पुकार सुनकर न्याय करनेकी चेष्टा करती है। और समय २ पर इनके अधिकारोंके संशोधनका विचार भी किया जाता है॥

अध्याय ८.

अन्य राज्योंसे ब्रिटिश शासनकी तुलना।

बालवयमें महारानी नहीं जानती थीं कि मेरे समयमें ब्रिटिश राज्य यूरोप भरके राज्योंसे अनेक बातोंमें बढ़ जायगा किन्तु ईश्वरको इनके शासनमें ब्रिटिश प्रजाका अपूर्व उपकार और उन्नति करनी स्वीकृत थी। इस अध्यायके विषय पढ़नेसे मालूम होता है कि यह राज्य यूरोपके साम्राज्योंमें किस दबदबे और कैसी स्थितिका है। यूरोपके अन्य राज्योंमें एक, दो, तीनसे बढ़कर धर्म और जातिके लोग नहीं बसते हैं किन्तु महारानीके राज्यमें श्वेत, कृष्ण,पीले भूरे, और लाल रंगके मनुष्य बसते हैं और उनका धर्म ईसाइयोंमें प्रोटेस्टेंट, रोमनकेथोलिक, ग्रीक चर्चके सिवाय मुसलमान बौद्ध और मूर्ति पूजक हैं ॥

आज कलऐसी जन श्रुति होगई है कि महारानीके राज्यमें कभी सूर्य अस्त नहीं होता है। इसका प्रयोजन यही है कि उनका राज्य इस भूमंडलके प्रत्येक अंशमें थोडा और

बहुत विद्यमान है। इसकारण जब एक भागमें रात्रि होतीहै तो दूसरेमें अवश्य दिन होता है। ब्रिटिश राज्यकी अन्य राज्योंसे तुलना इस भांति है:—

राज्य	क्षेत्रफल	लोकसंख्या	प्रति मनुष्य व्यापार	सामुद्रिक व्यापार टन
इंग्लैंड	१२००००००	३९००००००	३९० शि०	१४००००००
रूस	६४४४०००	१३००००००	२७ "	०
एमेरिकाके स्वतंत्ररा०	३६५००००	८७०००,००	१०० "	४८०००००
फ्रांस	२८४००००	९६००००००	१६२ "	१२४२०००
जर्मनी	१२३५०००	७००००००	१५६ "	२५०००००
इटाली	०	०	०	८७६०००
स्विटजरलैंड	०	०	०	०
स्वीडन, नार्वे	०	०	०	२३०००००

ऊपरके लेखे में जहांकी संख्या उपलब्ध नहोसकी वहां बिन्दी देदी गईहै। सन् १८५० ई० में इंग्लैंड में प्रति सैकडा ५·१३ भिखारी थे किन्तु सन् १८९९ ई० में ५·११ प्रति सैंकड़ा रहगये। जिसतरह वहां दीनता कमहुईहै उसी तरह अपराधियोंकी संख्याभी घटीहै। सन् १८५० ई० में सब मिलकर ४० हज़ार मनुष्योंको जेल हुआथा किन्तु सन् १८९० ई० में १८८७० को लंडन नगरकी बस्ती महारानीके राज्यमें २० लाखसे बढ़कर ४० लाख होगईहै। ब्रिटिश राज्यके पास इस समय सब मिलाकर ७॥ लाख सैनिकहैं। इनमें भारत वर्षके देशी रजवाड़ोंकी वह सेना जो सरकारकी सहायताके लिये दीगईहै और उसकी संख्या ३० हजारके भीतरहै सम्मिलित नहीं की गईहै। भारतवर्ष में कुल गोरी सेना ८० हजार और काली २॥ लाखके लगभगहै। यूरोपके सबराज्योंमें अंगरेज़ोंसे सेना अधिक है। इस बातका दिग्दर्शन नीचे के लेखेसे होताहै॥

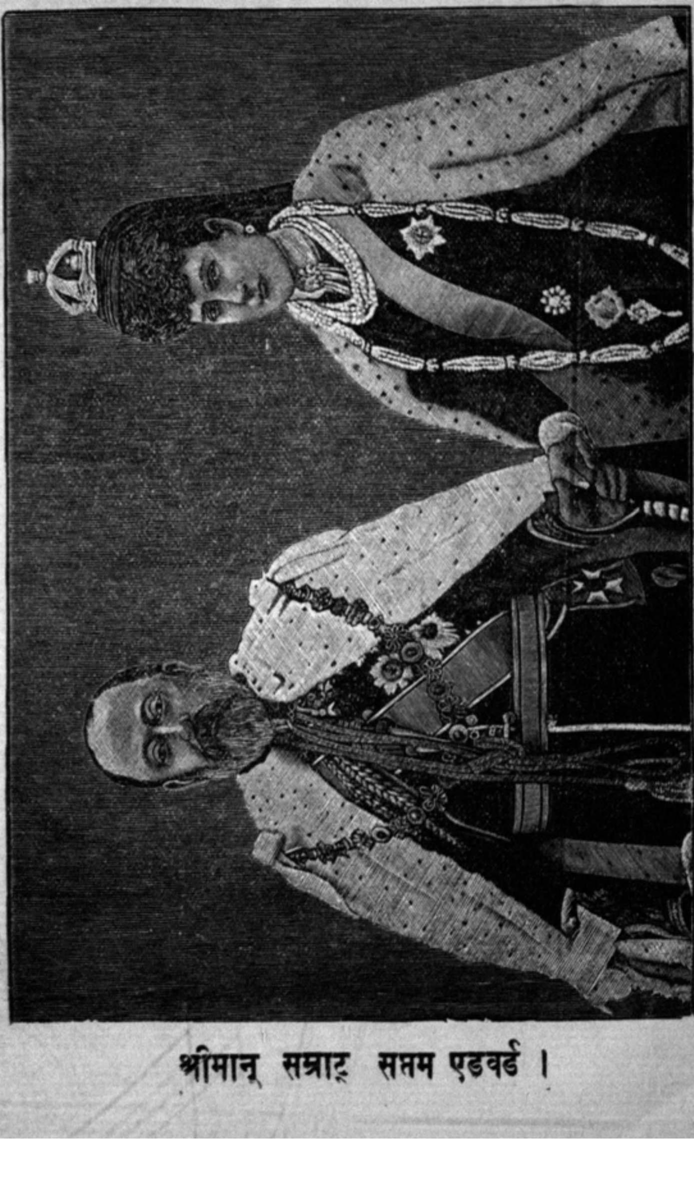
राज्य	शांतिके समय	युद्धकेसमय	सेनामें भरती करनेकी बलात् आज्ञा होनेसे प्रति वर्ष वृद्धि
रूस	९ लाख	२५लाख	०
फ्रांस	५ लाख ९० हजार	२५लाख	०
जर्मनी	४७९२२९	०	३लाख ६० हजार

आस्ट्रिया	३ लाख ६० हज़ार	१८ लाख ६०हज़ार आवश्यकता पडनेपर ४० लाख	०
रूम	७ लाख	समय पडनेपर २० वर्षके ऊपर ४० के भीतरका प्रत्येक मनुष्य सेनामें भरती किया जासकताहै ।	
यूनान	२६ हज़ार	८२ हज़ार	

यद्यपि अंगरेज़ी सेना थोड़ी है परंतु इनका चातुर्य अधिकहै इसलिये किसी राज्यको गवर्नमेंटसे लड़नेका साहस नहीं होताहै । अब इंग्लैंडमें सेना वृद्धिका विचार होरहाहै । संभवहै कि थोड़े कालमें वहांकी सेना बढ़जाय ॥

तीसराभाग समाप्त ।

श्रीमतीमहारानी एलेक्ज़ेंड्रा ।



श्रीमान् सम्राट् सप्तम एडवर्ड ।

श्रीगणेशायनमः ।

श्रीमान् सम्राट् सप्तम एडवर्ड का चरित्र ।

चौथा भाग ।

अध्याय १.

जन्म, विवाह और शिक्षा ।

सन् १८४१ ई० के नवंबर मासकी ९ तारीखको इंग्लैंडके बकिंगहाम राज महलमें श्रीमती महारानी विक्टोरियाके दूसरे गर्भसे पुत्रका जन्म हुआ। श्रीमतीके उत्तराधिकारी उत्पन्न होनेके हर्षमें ब्रिटिश और भारतीय प्रजामें आनन्दकी बधाइयां बजने लगीं । देश देशांतरके राजा, प्रजा, अमीर, ग़रीबने बधाईके तार और पत्र भेजकर राजमहलको भर दिया । ब्रिटिश साम्राज्यके बडे २ नगरोंमें हर्षसूचक सभायें हुई और राज्य भरमें इस बातके निमित्त उत्सव कियागया । संसारमें पुत्र मुखके सदृश कोई दर्शनीय सुखनहीं है । महलों में सुख भोग करनेवाले राजा और झोंपड़ेमें निवास करने वाले भिखारीको पुत्रके जन्मसे बराबर सुख होताहै। राजा उसका राजसी ठाठसे लालन पालनकर मनको प्रफुल्लित करता है और दीनपुरुष अपनी शक्तिके अनुसार खर्च करके । किन्तु दीनका सुख राजाके सुखसे किसी अंशमें कम नहीं होताहै ।। ऐसीदशामें यदि श्रीमती और उनके पतिको पुत्रके जन्मसे सुख हुआ होतो आश्चर्यही क्याहै। परंतु इनका सुख असाधारण था। यह दंपति पुत्र पुत्रीका मुख देखकर हर्षविव्हल होजातेथे। इनके जन्मके पश्चात् दोनों बालकोंके मुख कमल निहारकर ऐसे मग्न होगये थे कि कोई भी इष्ट मित्र और संबंधी के नाम का ऐसा पत्र रीता नहीं जाता था जिसमें इन्होंने अपने इस सुखकी चर्चा न कीहो । इनके जन्मके एक मासबाद श्रीमतीने अपने चाचा बेलजियमके राजा लियोपोल्डके नामलिखाथा कि "मेरा प्यारा पुत्र कैसा निकलैगा इसबातके जाननेकी मेरे मनमें सदा उत्कंठा रहती है परन्तु मैं आशा करती हूं कि यह अपने पिताके तुल्य होगा " ॥

२५ जनवरी सन् १८४२ ई० को ईसाई धर्मके अनुसार इन्हें राजसीठाटसे बपतिस्मा दियागया। उस समय राजकुमारके धर्म पिता प्रूशियाके राजा बनाये गये। नाम करण संस्कारमें इनका नाम श्रीमतीकी ओरसे एलबर्ट और पिताके नामपर एडवर्ड रक्खागया। इसतरह दोनों नामोंको मिलाकर 'एलबर्ट एडवर्ड' संयुक्त नाम हुआ। इनके और इनकी भगिनी (वर्त्तमान जर्मन सम्राट्की माता) के लालन पालनका कार्य मिस ब्रोम नामकी एक विदुषीको देकर इसका वेतन दश हजार पौंड वार्षिक नियत किया गया। इंग्लैंडकी राजरीतिके अनुसार युवराजका जन्म होतेही वह ड्यूक आफ् कार्नवाल कहलाने लगताहै इसलिये यह इस पदवी को तो जन्मके साथ प्राप्त करही चुके थे किन्तु इसदिन इन्हें विंडसरके राजमहलमें बहुत धूमधामके पश्चात् "प्रिंस आफ् वेल्स" की पदवी दीगई। इस उत्सव में २० लाख रुपया व्यय हुआ। जबसे ब्रिटिशलोगोंने वेल्सके राजाको परास्त कर वेल्स राज्य इंग्लैंडमें मिलाया वहांका युवराज "प्रिंस आफ् वेल्स" कहलाताहै। इसी नियमके अनुसार इनको यह पद दियागया। इसके सिवाय सेक्सकोवग गोथाके ड्यूकका पदभी इसीसमय इनको मिलगया और साठ हज़ार पौंड इनके वार्षिक व्ययकेलिये ब्रिटिशराज्यकी ओरसे नियतहुआ। इनके माता पिता इनसे 'बर्टी' अथवा 'प्यारे बर्टी' कहा करते थे॥

जब राजकुमार सात वर्ष के हुए इंग्लैंड में इनकी शिक्षाके विषयकी चर्चा होने लगी। इनके पिताने इस बात पर विशेष ध्यान दिया और इनकी शिक्षाके लिये मास्टर नियत करते समय कहा कि– "यह बहुत आवश्यक बातहै। ईश्वर इस पर कृपा करै क्योंकि आजकल संसार की उन्नति का आधार राजाकी शिक्षा पर है।" आपके मित्र बैरन स्टाकमोरकी सम्मतिके अनुसार इनको इस प्रकारकी शिक्षा देना स्थिर हुआ जो इंग्लैंड की भविष्यत् स्थिति के अनुकूल हो। इंग्लैंड की प्रजा इनकी शिक्षा के लिये बहुत उत्कंठित थी। इस सम्मति को उसने पसंद किया और मिस्टर गिब्स, मिस्टर फिशर और मिस्टर टार्वर इनके शिक्षक नियत हुए। इन तीनोंसे विद्याभ्यास करने के सिवाय इन्होंने जर्मनीके कोनिंग्स विंटर में और एडिनबरा, आक्सफोर्ड तथा केम्ब्रिज में रहकर शिक्षापाई। शिक्षा पाते समय इनके साथ साधारण व्यक्तिके समान वर्त्ताव किया जाताथा। इसबात को महारानीने स्वयं देखकर बहुत हर्ष प्रकट किया। सन् ६१ ई० में यह केम्ब्रिज विश्वविद्यालयकी अंडर ग्रेड्युएट परीक्षा में उत्तीर्ण हुए और सन् ६८ ई० में

आक्सफ़ोर्ड विश्व विद्यालय ने डी. सी. एल्., ट्रिनिटी कालेज एडिनबरा और डबलिन की यूनिवर्सिटियोंने एल्. एल्. डी की और सन् १८७४ ई० में कलकत्ता विश्व विद्यालयने इनको सम्मानार्थ यही पदवी प्रदान की ॥

सन् १८४८ ई० में यह अपने माता पिताके साथ आयर्लैंड गये। वहांकी प्रजाने इनका बहुत सम्मान किया। वहांसे लौटने पर ३० अक्टूबर सन् १८४९ ई० को यह प्रथम वार अपनी माताकी आज्ञासे एक्सचैंजकी सभामें विराजे। राजसी तौर पर इनकी सवारी निकलनेका यह प्रथमही अवसर था इसलिये लंडनका बाजार इनके दर्शनके लिये भीड़से खचाखच भरगया ॥

सन् १८५१ई०में आपको प्रथम वार लार्ड सभामें स्थानमिला। और इनकी बेठक महारानीके पास नियत हुई। सन् ५५ ई० में यह माता पिताके साथ, क्रीमिया युद्धमें घायल होने वालोंको, देखनेके लिये चेथेरके अस्पतालमें गये। सैनिकों की रक्षाके लिये जो फंड खोलागया उसमें इन्होंने अपना चित्र भेजकर पचपन गिनीका उपहारपाया औ वह उपहार इस कार्यमें लगादिया ॥

राज्यप्रबंधकी झंझटोंमें लगे रहने पर भी महारानीका इनकी शिक्षापर बहुत ध्यानथा। वह इनको उत्तम शिक्षा दिलाकर धार्मिक राजा बनाना अपना प्रधान कर्तव्य समझतीथीं। इस विषयमें श्रीमतीके चरित्रके अध्याय२५में लिखागयाहै। यहां पुनरुक्ति करनेकी आवश्यकता नहीं है तथापि इतना कहना चाहिये कि एक बार कोई विद्वान् युवराजकी परीक्षाके लिये राजमहलमें गयाथा। उसने इनको धार्मिक विषयोंमें निपुण पाकर इनके शिक्षकोंकी प्रशंसाकी। यह बात इन्हें असह्य हुई। यह तुरंत बोला उठे कि-" हमें धार्मिक शिक्षा मास्टरोंने नहीं दीहै किन्तु यह कार्य माताने कियाहै।" माताके उपदेशानुसार यह नित्य गिरजेमें जाया करतेथे। क्रीमियाके युद्धके पश्चात् जब यह फ्रांस गये तो वहांभी इन्होंने गिरजेमें प्रार्थनाके लिये जाना न छोड़ा ॥

चौदह वर्षके वयमें इन्होंने इंग्लैंडके पश्चिम भागकी यात्राकी। इसके बाद जर्मनी की यात्रासे लौटकर जब यह आयर्लैंडगये तब इनकी उमरका अठारहवां वर्ष पूराहोचुकाथा। माताने इनको उन्नीसवीं वर्षग्रंथिपर एक पत्रलिखा जिसका आशय यह थाकि-" अबसे तुम युवा होगये। अब माता पिताकी रक्षासे अलग हुए। अब तुम अपने कार्य संपादन करनेमें स्वतंत्रहो। आजसेही तुम्हारी पढ़ाई बंदकी गईहै। इसका कारण यही है पढ़नेसे कहीं तुम्हारा मस्तिष्क निर्बल न पड़जावै। निर्बल मस्तिष्क वाले पर चाटु कारों (खुशामदियों) का बड़ा प्रभाव पड़ताहै। यह बात राजाओंके लिये बहुत हानिकरहै। अब तुम

स्वतंत्रहो। इससमयसे तुम्हारे ऊपर शिक्षाका दबाव नहीं डाला जायगा। परंतु यथावश्यक मैं और मेरे पति तुम्हें अच्छी और उचित सम्मतिदेनेमें तैयार रहेंगे।"इसीदिन श्रीमतीने इनको सेनाका अवैतनिक कर्नल नियत किया।महारानीका पत्र पाकर इनकी आंखोंमेंसे आंसू भर आये और उसी पत्रको इन्होंने भविष्यत्के लिये अपना पथदर्शक बनाया। एडिनबरोमें निवासकर इन्होंने सर लायन प्लेफे-रसे इतिहास, शिल्प तथा इटाली, जर्मन और फरांसीसी भाषामें शिक्षा पाई और इसी वर्ष इन्होंने गार्टरके नाइट्की उपाधि धारण कर कर्नेल ब्रूससे युद्ध शिक्षा आरंभ की॥

अपनी उन्नीसवीं वर्ष गांठका उत्सव हो जानेके एक मास बाद यह भेष बदल कर बैरन रेंड्रके नामसे गुप्त रीतिपर फ्रांस देशकी यात्रा करने गये। इस यात्रा-में यह रोमके पोपसे मिले और स्पेन तथा पुर्तगाल होकर इंग्लैंडको लौट आये। यहाँ आने बाद इन्होंने पढ़ने और सेनाकी कवाइद सीखनेमें इतना परिश्रम किया कि इंग्लैंडके समाचार पत्र इनके लिये "अधिक बोझेसे दबा हुआ राज-कुमार" कहने लगे। ऊपर लिखे विषयोंके सिवाय इन्होंने आईन पढ़नेमें और रसायन शास्त्रका अभ्यास करने पर विशेष ध्यान दिया। पढ़नेके साथ ही साथ सप्ताहमें तीनवार इन्हें सेनामें कवाइद सीखने भी जाना पड़ता था॥

जब आपका वय विवाह योग्य हुआ, अनेक राज कुमारियां आपसे विवाह करनेकी अभिलाषा करने लगीं परंतु इससे पूर्वही यह डेनमार्क की राजकुमारी एलेक्ज़ेंड्रा का चित्र देखकर उसपर मोहित हो चुकेथे इस लिये इन्होंने किसी और को पसंद न किया। सन् ६१ में जर्मनीकी यात्राके समय आपकी प्राण-प्यारीसे प्रथम बार भेंट हुई। वहांसे हालैंड जेरूसलेम और कुस्तुनतुनियाकी यात्रा कर जब आप बेलजियम गये तो वहां फिर राजकुमारीसे भेंट हुई। इसी भेंटमें दोनोंने विवाह करना निश्चय किया। उस अवसरमें इनके पिता (श्रीमतीके पति) का देहान्त हो चुकाथा इस लिये कुछ कालतक यह बात गुप्त रक्खी गई किन्तु महारानीका शोक छुड़ानेके लिये १० मार्च सन् १८६३ई०को विवाह होगया। इनकी प्रियपत्नीका जन्म १ दिसंबर सन् १८४४ई० का है। सन् ८८ई० में आपके विवाहको पूरे पच्चीस वर्ष होने पर रुपहरी विवाहका उत्सव किया गया। और ईश्वर कृपासे सन् १९१३ई० में सुनहरी विवाह होगा। विवाहके पश्चात् पार्लियामेंटने इनको ४० हज़ार पौंड अधिक और इनकी पत्नीको १० हज़ार पौंड वार्षिक देनेका ठहराव किया॥

सन् ६४ ई० में आपके प्रथम पुत्र परलोक वासी ड्यूक आफ् क्लारेंस (प्रिंस एल्वर्ट विक्टर) का और दूसरे ही वर्ष ड्यूक आफ यार्क (प्रिंस ज्यार्ज) का जन्म हुआ इनके सिवाय आपके जितने पुत्र और पुत्रियां हुई उनके नाम वंश वृक्षमें लिखे गये हैं ॥

श्रीमान्के बड़े पुत्र ड्यूक आफ क्लारेंसकी मृत्युसे जो शोक हुआ उसका वर्णन महारानीके चरित्रके अध्याय ४५ में किया गया है । और अध्याय ४७ में आपके द्वितीय पुत्र ड्यूक आफ यार्क (वर्तमान प्रिंस आफ वेल्स) के विवाह संततिका वर्णन है ॥

अध्याय २.

सालीसे विवाह करनेका बिल और एमेरिकाकी यात्रा ।

५ फरवरी सन् १८६७ ई० को श्रीमान् पार्लियामेंटकी लार्ड सभामें भरती हुए । इन्होंने लिबरल और कंसर्वेटिव दलोंके परस्पर झगड़ोंमें पड़ना उचित न समझकर कभी राज्यप्रबंधके कामोंमें सम्मति न दी । और जिस समय जिस दलका मंत्रि मंडल होता उससे उदासीन रहना और उसके विरुद्ध पक्षके साथ मेल रखना यही अपने भविष्यत्के शासनके लिये उपयोगी समझा किन्तु स्वर्गवासी मिस्टर ग्लैडस्टन पर इनकी बहुतही पूज्य बुद्धि थी । प्रायः उनके मकानपर जाकर उनसे मिला करते थे ॥

यूरोपियन लोगोंमें अपने ही कुटुंबकी कन्यासे विवाह करलेनेकी चालतो है परंतु ईसाई धर्मके अनुसार सालीसे विवाह होना दूषित समझा जाता है । इस चालको तोड़कर सालीको विवाहनेकी स्वतंत्रता मिलनेके लिये इंग्लैंडकी प्रजामें आन्दोलन हुआ इसका परिणाम यह हुआ कि इस विषयका एक बिल पार्लियामेंटकी लार्ड सभामें उपस्थित किया गया । उस समय आपने अपने सदाके नियमका भंगकर इस बिलके अनुकूल सम्मतिदी ॥

विवाहके पांच वर्ष बाद आप सपत्नीक आयर्लैंड गये । वहांकी प्रजाका प्रेम और विश्वास संपादन करनेके लिये आपने डबलिनके मुहल्लोंमें फिरते समय अपने साथ शरीर रक्षक न रक्खे और दंपति अकेलेही इधर उधर घूमते रहे किन्तु आयर्लैंडकी प्रजाने इंग्लैंडके साथका द्वेष भाव छोड़कर इनके लिये बहुत राजभक्ति दिखाई और इनका बड़ा सम्मान किया ॥

क्रीमियाके संग्राममें केनाडाने एक पैदल रेजिमेंट भरतीकर इंग्लैंडकी सहायताके लिये भेजी थी । इस सेवाके बदले वहां वाले चाहते थे कि एक बार महारानी एमेरिका जाकर उन लोगोंके देशको सम्मानित करैं । दूर देशकी यात्रा और मार्गके कष्टका विचारकर जब श्रीमतीने जानेका निषेध किया तो वे लोग प्रार्थी हुए कि हमारे देशका शासन करने के लिये श्रीमतीका कोई पुत्र गवर्नर जनरल नियत किया जावै । यह बातभी अस्वीकृत हुई और उनका संतोष करने के लिये युवराज का भेजना निश्चय हुआ । इन्होंने वहां जाकर सेंट लोरेंस नदी का पुल अपने हाथसे खोला और ओटावाकी पार्लियामेंट का भवन बनाने के लिये नींवका पत्थर डाला । केनाडामें इनका आशासे अधिक सत्कार हुआ । यह यात्रा सन् ६० ई० में हुई थी । इनके सत्कार का अनुमान सेंट जानके पादरी की मेमके एक पत्रसे होताहै जो उसने लेडी हार्ड विक को लिखाथा । उस पत्रका आशय यह था कि– " यदि न्यूफौंड लैंडकी तरह सबही उपनिवेशों में इनका सत्कार होगा तो इस दौरे से देशको बहुत कुछ राजनैतिक लाभ होगा । इनके दर्शन से सब ही स्त्री पुरुषों के हृदयमें बहुत आनन्द हुआहै । यहां ऐसा कोई मनुष्य नहींहै जो राजकुमार के वियोग पर आंसू न बहाताहो । गवांर मछुए उनको देख२ कर हर्षसे विह्वल होगयेहैं।वे पुकार२कर यही कहतेहैं कि ईश्वर राजकुमारके मुख कमलको सदा प्रफुल्लित रक्खै " जैसा सत्कार न्यूफौंड लैंडमें हुआ वैसाही सर्वत्र हुआ और एमेरिकाके संयुक्त राज्योंके प्रेसीडेंट मिस्टर बुकेनके अनुरोधसे२४जूलाई सन्१८६०ई०को आप वहांकीराजधानी वाशिंगट्टन गये।वहांके नाचोंमें यह बडे२रईसों और मछुओंकी स्त्रियोंके साथ नाचे। जिन दिनों यह वाशिंगट्टनमें प्रेसीडेंटके यहां मेहमानथे उस नगरमें एक भयंकर खेल होता था।इसखेलमें एक नट नाइगरानदी के आरपार रस्सा बांधकर पैरोंमें बांस बांध उनके सहारेसे चलकर नदीके दूसरे किनारे पर चला जाताथा।श्रीमान्ने इस भयंकर खेलसे किसीदिन उसके प्राणजानेकी संभावना समझकर उसे इसकार्य से रोका परंतु उसने इनकी सम्मति न मानी और कहाकि यदि आप मेरी पीठ पर चढजावैं तो मैं आपको भी ले जासकताहूं । एमेरिकाके प्रेसीडेंटने इनकी यात्राके विषयमें महारानीको जो पत्र लिखा उसमें लिखाथा कि" राजकुमारने हम सब लोगोंके मनको जीत लियाहै " । फिलेडेलफिया और न्यूयार्क होकर जब आप इंग्लैंडको रवाना हुए तो मार्गमें इनके जहाज़ पर एक दुर्घटना हुई । इनके लंडन पहुंचने में विलंब देखकर महारानी और प्रजा घबड़ाउठी । और

इनको ढूंढनेके लिये लंडनसे कई एक जहाज़भेजेगये । दुर्घटनासे मार्गमें दिन अधिक लगे इसकारण जहाज़मेंका भोजन चुकगया और कुछदिन तक आपको सूखी रोटीपर निर्वाह करनापड़ा । कष्ट उठानेके बाद जब यह इंग्लैंड पहुंचे तब वहां बहुत उत्सव कियागया ॥

इस यात्रासे आपने बहुत अनुभव प्राप्त किया । न्यूके सलके ड्यूकने इस यात्राके विषयमें कहा था कि–"केनाडाकी यात्रासे राजकुमारको बहुत लाभ हुआहै । इनका मन और विचार नये सांचेमें ढल गये हैं । इन्होंने इस अनुभवकी पाठशालासे अपने स्वभावमें जो परिवर्त्तन किया है वह माता पिताके लिये सुखद है और इसीसे इनको भविष्यत्‌के कर्तव्य सूझने लगे हैं । यद्यपि एमेरिका आनेमें दो राज्योंके बीच कोई नवीन प्रकारकी संधि नहीं हुई है परंतु इनका आगमन और सत्कारही इंग्लैंड और एमेरिकाकी दोनों जातोंमें विना लिखा हुआ संधिपत्र है जो मित्रताको सूचित करता है"॥

अध्याय ३.

श्रीमान्‌की बीमारी और भारतकी यात्रा।

सन् १८७१ ई० में श्रीमान्‌को भयंकर ज्वर पीडा हुई। रोग इतना बढ़ गया कि आपके जीनेकी आशा न रही । और ब्रिटिस राज्यमें उस समय ऐसा कोई नगर न रहा जिसमें आपकी आरोग्यताके लिये ईश्वरसे प्रार्थना नकी गई हो। जब आपके आरोग्य होनेकी खबर प्रकाशित हुई देश भरमें आनन्द छागया। प्रजाने अंतःकरणसे महारानीको इस हर्षकी बधाई दी। इस विषयमें श्रीमतीके चरित्रके अध्याय४३में लिखा गया है। बीमारीसे आरोग्य होने पर जब आपको प्रजाका असीम प्रेम विदित हुआ तब आपने अधिक प्रजाप्रियता ग्रहणकी और उसी दिनसे आपके चित्तपर ऐसा प्रभाव पड़ा कि कभी किसीको आपके विरुद्ध लिखने वा कहनेका अवसर न आनेदिया और उन्नीसवीं शताब्दिका आप एक नमूना समझे जाने लगे ॥

श्रीमान्‌की भारतयात्राके संवादका कुछ अंश श्रीमतीके शासनकी मुख्य घटनाओं में अध्याय ३८ में प्रकाशित हुआ है । आप ११ अक्टूबर सन् १८७५ई० को लंडनसे बिदा होकर पैरिस, एथेन्स, इटाली होते हुए ३० नवंबर को बंबई आये। भारत वर्षके मुख्य २ नगरोंमें आपने भ्रमण किया और अनेक राजाओंकी राजधानियोंमें जाकर उनसे भेट की । आपके स्वागतमें आगरेमें

एक बृहत् दर्बार हुआ। इसमें देश भरके राजा महाराजा इकट्ठे हुए। आगरेका ताजमहल देखनेके लिये जिस समय आप पधारे एक यूरोपियनने एक भारत वासीको धक्के देकर निकाल दिया। इस घटनाको देखकर श्रीमान्‌को उस यूरोपियन कर्मचारी पर क्रोध आया और आपने उसे निकट बुलाकर कुछ डांटा। भारत वर्षकी प्रजासे प्रेम बढानेके लिये दो भारतवासी रईसोंको जिनमें एक जोधपुर नरेशके चाचा महाराजा सर प्रतापसिंहजीहैं, अपना एडीकैंप (शरीररक्षक) नियत किया। श्रीमान्‌के स्मारक में बंबईकी गोदी, आगरेमें एक बाज़ार, चनाब नदीका पुल, बनारसमें अस्पताल और अनेक नगरोंमें भिन्न २ प्रकारके मकान बनाये गये। लखनऊकी म्यूनिसिपेलिटीने आपको दश हज़ार रुपयेके मूल्यका एक ताज भेंट किया। काश्मीर नरेशने पांच हजार पौंड दिये। इनको भारत वर्षके राजाओंकी ओरसे भेंटमें जो सामान मिला उसका अनुमान इससे हो सकता है कि, उस वर्ष इस कार्यके लिये सब राजाओंने मिलकर २॥ लाख पौंडका माल विलायतसे मंगवाया था। जिस समय आप विलायत गये इन्होंने भारत वर्षसे जो २ सामान मिलाथा उसकी एक छोटीसी प्रदर्शिनी कर इंग्लैं- डकी प्रजाको दिखलाया। लेखा लगानेसे विदित हुआ है कि, देशी राजाओंकी ओरसे पांच लाख पौंड़का माल आपकी भेंट हुआ। यात्राके समय आपने जय- पुर और मैसूरमें शिकार खेली। जयपुरके जेलका निरीक्षण करते समय एक कैदीने आपसे कहा कि, मैंने अबतक तेरेसठ मनुष्योंका वध किया है॥

भारतवर्षकी प्रजा और देशी राजाओंने आपका जैसा सत्कार किया था वैसा ही आपने उस समयके बाइसराय लार्ड नार्थ ब्रूक को एक पत्र लिखकर स्वीकार किया। उस पत्रमें लिखाथा कि, "महारानीका प्रतिनिधि बनकर मैंने एक विचित्र देशको देखा। श्रीमतीकी प्रजासे गाढ़ा संबंध और प्रेम संपादन करने तथा इस अद्भुत देशको देखनेकी मेरी बहुत कालसे इच्छा थी। मेरी आशा विचारसे अधिक फलवती हुई। मैंने जो कुछ यहां देखा वा सुना है उसे अपने चित्तपर दृढतासे अंकित कर मैं यहांसे लौटताहूं। मैंने जो यहां अनुभव प्राप्त किया है वह आगे बहुत उपयोगी होगा। देशी राजा और प्रजाका अत्यंत सत्कार पाकर मुझे परम संतोष हुआ है। यह उनकी राजभक्तिका सच्चा चिह्न है। ब्रिटिश शासनके लाभोंके विषयमें भारतकी करोड़ों प्रजाका जैसे २ अधिक वि- श्वास होगा वे जानते जायँगे कि अंगरेज़ लोग भारत की वास्तवमें उन्नति चाहते हैं। भारत वर्षकी देशी सेना देखकर मुझे हर्ष हुआ है। यह सेना हमारे लिये गर्वका स्थल है। सिविल सर्विसवालोंके विषयमें मेरे अच्छे विचारहैं।

ये लोग अपने कर्तव्यका खूब पालन करते हैं। और इनसे प्रजाकी उन्नति होने-के साथ ही संतोष बढ़ता जाता है। आपने अन्य कर्मचारियों सहित मेरी जो सेवा की है उसे मैं सदा स्मरण रक्खूंगा।" कलकत्तेसे विदा होते समय आपने भारतवर्षकी सेनाके लिये कहा कि—"मुझे इस बातका गर्व करना चाहिये कि, भारतकी देशी सेना दृढ, साहसी और योग्य है"॥

श्रीमान् सत्रह सप्ताहकी यात्राके पश्चात् १३ मार्चको बंबईसे विदा होकर कुशलपूर्वक लंडन पहुंच गये॥

अध्याय ४.

यहूदियोंपर दया और गुप्त यात्रा।

यूरोपके अन्य राज्योंकी तरह इंग्लैंड भी महारानीके राज्यारंभके कुछ कालपर्यंत यहूदियोंसे द्वेष रखता था। ईसाइयोंका यहूदियोंसे धर्मद्वेष है। इसी कारण उस समय इंग्लैंडमें उन्हे बड़े २ पद नहीं दिये जाते थे। श्रीमतीने इस प्रथाको उठाकर दोनोंको समान कर दिया। श्रीमान्‌नेभी इस विषयमें माताका अनुकरण किया। और नगरके बड़े २ धनाढ्य यहूदियोंके यहां निमंत्रण पानेपर विवाहके समय पधारकर अनेक बार इस सहानुभूतिका परिचय दिया। और जब २ दोनों दलोंमें द्वेष बढ़ता देखा तबही निर्बल यहूदियोंके साथ सहानुभूति कर निपटारा करवाया॥

भूमंडलमें ऐसा कोई भी देश नहीं है जहां आपके दो चार मित्र विद्यमान न हों। यात्राके समय नवीन मित्रोंको ढूंढना भी आपका एक उद्देश्य रहता है। आप फरांसीसी जर्मन और इटालीकी भाषा खूब बोल सकते हैं और रूसी भाषा भी जानते हैं। इनका फ्रांसकी राजधानी पैरिस पर अधिक प्रेमहै। जब२ अवसर पाते हैं वहां अवश्य जाया करते हैं। सन् १९०० ई० की महाप्रदर्शिनीमें आपने पैरिस जाना निश्चय कर लिया था परंतु ट्रांसवालके युद्धसे फ़रांसीसियोंका अंगरेज़ों पर उनदिनोंमें क्रोध भड़क रहा था और वे लोग श्रीमती और युवराजके चित्रोंका अपमान कर अपना ओछापन बतला रहे थे इस लिये फ्रांसके प्रेसीडेंट मिस्टर लोवेने आपको पत्र लिखकर ऐसे समयमें पैरिस आनेसे रोकनेके साथही लिखा कि "यद्यपि फ्रांसकी गवर्नमेंट आपकी रक्षाका अच्छा प्रबंध कर सकती है परंतु इस अवसर पर आपको आना उचित नहीं है।" बस इस पत्रको पाकर आपने इस यात्राको

बंद कर दिया । इनका पैरिससे अधिक प्रेम देखकर फ्रांसकी गवर्नमेंटने इनके लिये एक अलगही सेलून (रेलकी गाड़ी) बनवाई है जिसमें सात हज़ार पौंड व्यय हुआ है ॥

फ्रांस और जर्मनीका लोमहर्षण संग्राम समाप्त होनेके बाद इनकी यह इच्छा हुई कि वहां जाकर समरभूमिका अवलोकन करें। इस युद्धमें फ़रांसीसियोंकी हार हुई थी इसलिये प्रकाश्य रूपपर जाने में उनलोगोंके जीव दुखनेकी संभावना थी और इनका फ्रांसपर इतना बढ़कर प्रेम था कि, यह उनको दुःखी करना नहीं चाहते थे इसलिये इन्होंने वेष बदलकर सन् ७० ई० में सीडेन का मैदान देखा । रणभूमिको देखकर आप लौटे तो मार्गमें इनके पासका खर्च चुकगया । यद्यपि तार देकर यह इंग्लैंडसे रुपया मँगवा सकते थे परंतु इन्होंने सोचा कि, तारसे हमारा भेद खुल जायगा इसलिये होटलवालेको घड़ी बेंचकर उस द्रव्यसे यह लंडन पहुँचे । ऊपर आपकी बीमारीका जो उल्लेख है वह इसी यात्रासे लौटने पर हुई थी । इस बीमारीमें इनकी प्रियपत्नीने बहुत कुछ सेवा सुश्रूषा की ॥

अध्याय ९.

श्रीमान्‌पर प्राणसंकट और न्यायालयमें साक्षी ।

यूरोपमें राज्यका चाँहे जैसा उत्तम प्रबंध हो किन्तु वहांकी प्रजा भारतकी तरह राजाको ईश्वरका अवतार माननेवाली नहीं है । वहांके लोग बड़े बुद्धिमान् होनेपर भी थोड़ीसी बातमें आत्मघात करने और मनुष्यवध करनेसे नहीं हिचकतेहैं । उनलोगोंमें असहिष्णुता इतनी बढ़कर है कि, राजाके प्राण लेनेपर भी वे लोग उतारू होतेहैं । प्रचलित राजनियमोंसे अप्रसन्न होकर वे न मालूम क्या २ कर डालतेहै । इन राजद्रोहियोंके दल भिन्न २ राज्योंमें भिन्न २ नामसे प्रसिद्धहै । श्रीमान्‌पर भी अब तक दोतीन बार आक्रमण होचुकेहैं । पिछली बार सन् १९०० ई० में बेलजियम की ओर जाते समय आपपर सिपेडो नामक मनुष्यने गोली चलाई थी । ईश्वरकृपासे गोलीका निशाना चूक गया और अपराधी पकड़ा गया ॥

सन् ७६ ई० में भारत से लौटने बाद इंग्लैंड के मद्य बनानेवाले एक बड़े कार्यालयकी ज्यूबिलीका उत्सव था । वह कार्यालय श्रीमान्‌के पिताकी प्रेरणासे

स्थापित हुआ था इस लिये इन्होंने उसके प्रबंधकोंकी प्रार्थनापर इस उत्सवका अध्यक्ष बनना स्वीकार किया । यह बात इंग्लैंडकी उस प्रजाको जो मद्यपान करना बुरीसमझतीहै अनुचित जानपड़ी । वहांकी दो सौ मद्यपान निवारिणी सभाओंने श्रीमान्से बिनय किया कि "मद्य देशकी बहुत हानि कर रहाहै,किसी प्रकारसे इसका प्रचार कम करना चाहिये परंतु आपके अध्यक्ष बननेसे मद्यको उत्तेजना मिलैगी इसलिये आप यदि इस पदको स्वीकार न करैं तो देशका कल्याणहोगा ।" उनकी अर्जियोंके उत्तरमें आपने कहाकि "मैं मद्यको उत्तेजना देनेके अभिप्रायसे इसकार्य में संयुक्त नहीं हुआहूं किन्तु यह कार्यालय मेरे पिताका स्थापित किया हुआहै इसलिये उसकी सहायता करना मेरा कर्तव्यहै" ॥

सन् १८९० ई० में आपको एक बार न्यायालयमें साक्षीदेनेके लिये जाना- पड़ा । इस अभियोगमें वादी श्रीमान्के मित्र सर विलियम गार्डन कचंगथे।इनपर एक खेलमें ट्राइनबी क्राफ्टमें पांच मनुष्योंने जाल करनेका अभिशाप लगाया था। साक्षीके समय श्रीमान्को लार्ड चीफजस्टिसके पास बैठनेके लिये कुर्सी मिली । हाईकोर्टमें उसदिन दर्शकोंकी इतनी भीड़ थी कि पैर रखनेको जगह नहीं मिलती थी । आपसे ज्यूररने पूंछा कि "क्या आपने वादीको कभी जाल करते हुए देखा है?" श्रीमान् हँसकर बोलेः—"वादी मेरा मित्र है । एक मित्र दूसरे मित्रका जाल कभी नहीं देखसकता है । वह मित्रही क्या जो मित्रके कामोंमें दोष देखै ।" तब ज्यूररने दूसरा प्रश्न किया" आपकी दृष्टिमें वादी अपराधी है वा नहीं?" इसके उत्तरमें आपने कहा कि" अधिक लोगोंकी सम्मतिमें वादी अपराधी है इसलिये उसे दोषीमाने विना छुटकारा न होगा" बस इस साक्षीपर न्यायालयने प्रतिवादियोंके लाभमें फैसला करदिया ॥

अध्याय ६.

राजप्रबंधमें रुचि ।

सन् ९३ ई० में प्रियपुत्रके वियोगका दुःख भुलानेके लिये गवर्नमेंटने इनको एक कमीशनका सभासद नियत किया । इंग्लैंडमें मकानोंका किराया बहुत बढ़ा चढ़ाहै। इसकारण वहांके दीन लोग बहुत कष्ट पाते हैं । यह कमीशन उनको सस्ते भाड़ेपर मकान बनादेनेके विचारके लिये नियत हुआथा। इसका कोईभी अधिवेशन ऐसा न गया जिसमें आप उपस्थित न हुएहों ।

केवल इतनाही क्यों बरन आप दीन लोगों की सच्ची स्थिति जानकर कमीशनमें पेश करनेके लिये रात्रिके समय वेष बदल कर घूमते थे। इसीके लगभग लंडनमें एक प्रदर्शिनी खोलीगई थी । लोगों ने उसके लिये इतनी उदासीनता ग्रहणकी कि अंतमें उसकी सफलतामें संदेह होगया। ऐसे समयमें आपने उसका बहुतसा माल खरीद कर लोगोंको उत्तेजित किया । परिणाम यह हुआ कि प्रदर्शिनी गिरते २ संभलगई । लंडनमें इम्पीरियल इन्स्टीटयूट नामक विशाल भवन जो भारत के द्रव्यसे बना है उसके संस्थापक भी आपहीहैं। इसके विषयमें श्रीमतीके चरित्रके अध्याय ४३ में लिखागया है ॥

अफ़गानिस्तानकी सीमापर जिस समय रूससे भारत गवर्नमेंटके प्रथमवार मुठभेड़ होनेका अवसर आया और दोनों ओरसे युद्धकी तैयारियां होने लगी थीं पल २ में भयानक संग्राम होनेका भय किया जाने लगा था । इसयुद्धका परिणाम भारतवर्षके लिये बहुतही बुरा था। उससमय माताकी आज्ञा और प्रजाकी प्रार्थनासे आप अपनी पत्नी सहित रूसकी राजधानी सेंट पीटर्सबर्ग दौड़े गये और वहां जाकर आपने रूसके सम्राट्को और आपकी पत्नीने साम्राज्ञी (अपनी बहन) को दबाकर बखेड़ा न बढ़ने दिया । दूसरी घटना जिसमें श्रीमान्के प्रभावसे दो देशोंमें युद्ध होते २ बच गया एमेरिकाकी है । कुछ वर्ष पूर्व एमेरिकाके प्रजातंत्र राज्य और अंगरेजोंके ब्रिटिश ग्वायना नामक प्रदेश की सीमापर द्वेषाग्नि भड़ककर युद्ध होनेका समय आ पहुंचा था। और एमेरिकाके संयुक्त राज्यकी यह इच्छा थी कि किसी यूरोपियन राज्यको एमेरिकाके छोटेसे छोटे राज्यपर भी चढ़ाई न करने दिया जावै । ऐसे अवसरपर घोर संग्राम होनेकी सम्भावना थी परंतु आपने न्यूयार्कके एक समाचारपत्रको एक तार भेजकर उसे प्रकाशित करवादिया। उस तारको पढ़कर एमेरिकाकी प्रजा ठंढी पड़ गई और उस समय इनकी एमेरिकाकी यात्राने बहुत काम दिया क्योंकि तबहीसे वहां वालोंकी इनपर पूज्यबुद्धि बहुत है ॥

इनको अपने पिताकी तरह आखेट और घुड़दौड़में बड़ा अनुराग है। पंद्रह वर्षकी उमर में यह राजकुटुम्बके लोगोंमें बढ़कर शिकारी गिने जाते थे । और घुड़दौड़में तो इनका इतना प्रेम है कि जिसका कुछ ठिकाना नहीं। इनके घोड़े घुड़दौड़की शर्तोंमें अबतक अनेक बार प्याले जीत चुके हैं । इनको घोड़ेकी परीक्षाका अच्छा अभ्यास है और उनकी नसल सुधारनेपर यह अधिक

यान देते हैं। पशु और पक्षीके पालनकी भी आपको रुचि अधिक है। सैडरिंग्हाममें इनका जानवर खाना है। इनके पश्वालयकी गौवें कईबार इंग्लैंडकी प्रदर्शिनियोंमें पारितोषिक पाचुकी हैं॥

अध्याय ७.

श्रीमान्के गुण और स्वभाव ।

फुटकर बातें ।

इनको शारीरिक परिश्रमके सबही खेलोंपर अनुराग है । सभाओंमें व्याख्यान देनेका इन्होंने अच्छा अभ्यास कर लिया है। धर्म सम्बन्धी कामोंके लिये जब कभी भोज वा सभा हो यह अपने हज़ार आवश्यक काम छोड़कर उसमें उपस्थित होते हैं और ऐसी जगह जानेमें कभी अपने सुख दुःखका विचार नहीं करते हैं। मित्रोंके साथ इनका बर्त्ताव बड़ा स्वच्छ है और छोटेसे लेकर बड़े दर्जेतक सबही तरहके इनके मित्र हैं। सैकड़ों क्या हज़ारोंही दीनोंको इनकी दानशीलताका परिचय है। जिस विषयमें इनकी सम्मतिका मित्रकी सम्मातिसे मेल नहीं होता है वहां मित्रोंपर दबाव डालना इन्हें पसंद नहीं है। विवादके समय यह सदा अपनीही सम्मतिपर दृढ़ रहकर उसपर अच्छीतरह बहसकरते हैं। अनेक वर्ष बीतजानेपर भी इनके बिचारोंका परिवर्तन नहीं होताहै। इन्होंने पूर्वके देशों की यात्रा बहुत की है। यह अनेक कमीशनों के अध्यक्ष बनचुके हैं इसलिये इनको प्रजाकी स्थिति विदित करनेका बहुत काम पड़ा है। बड़े पुत्रकी मृत्युके सिवाय इनको औरभी बहुत आपदायें सहनी पड़ीं हैं। और सिंहासनपर विराजनेके अनन्तर इन्होंने जो व्याख्यान दिया उसमें इनका अनुभव टपकता है॥

श्रीमतीके पतिकी मृत्युके बाद उनकी ओरसे प्रायः सर्वसाधारण उत्सवोंमें यही प्रतिनिधि बनकर जाया करते थे। लेवी दर्बारों और अन्य उत्सवोंपर अनेकबार यह महारानीके बदले उपस्थिति हुआ करते थे। और इस कार्यमें इन्हें नाना अवसरोंपर अनेकबार व्याख्यान भी देने पड़े थे। फ्रीमेसन नामक गुप्त धर्मके यह इंग्लैंडमें ग्रैंडमास्टर (मुखिया) हैं। यह पद इन्हें लार्ड रिपन के भारतमें आनेबाद सन् १८७५ ई०में मिला था। इन्हें नाटक देखनेका बहुत अनुराग है और इस लिये नाटकों और अजायबघरोंको इनके द्वारा बहुत उत्तेजना मिलतीरही है। यह गायन और फ़ेशनके बड़े अनुरागी हैं । इसकारण

लंडनका रायल म्यूज़िक कालेज इनकी ओरसे बहुत सहायता पाचुका है । इनके फ़ेशनके अनुरागसे इंग्लैंडके दूकानदारोंको बहुत लाभ पहुँचता है और इनकी प्रियपत्नी जिन नवीन २ प्रकारके वस्त्रों और आभूषणोंको बनवाती हैं उनकी स्त्रियोंमें नक़ल अधिक होती है ॥

यह काम करने में बड़े दृढ़ और सादे हैं । ब्रिटिश म्यूज़ियम (अजाइबघर) के यह ट्रस्टी थे इसलिये यह उसका काम काज देखने नित्य जाते और राजसी सत्कार सम्मानकी अपेक्षा न कर निरंतर उसका प्रबन्ध करते और जबतक काम समाप्त न होता वहांसे नहीं हटते थे इनको सरकारी पदको (तमगों) की प्रतिष्ठाका बहुत विचार रहता है । एक दिन एक नाचमें एक षोडशी युवती अपनी छातीपर कुछ चमकीला आभूषण पहनकर आई । नाचते २ श्रीमान् की उसपर दृष्टि जापड़ी। आपने उससे पूंछा कि "यह तमगा किसकाहै ।" वह रमणी डरते २ बोली–" लार्ड–का है । उनकी मुझपर बड़ी प्रीति है इस लिये वह मुझे देदिया करते हैं " । आपने उससे कहा कि–" आप इसे खोलकर मुझे देदें । मैं लार्ड–से कहूंगा कि यह केवल सोनेका टुकड़ा और हीरे का आभूषण ही नहीं है जो सुंदरियों की शोभामें काम आवै" ॥

जिनदिनोंमें आप विश्वविद्यालयमें पढ़ते थे, किसी मित्रके साथ आप केम्ब्रिज नगरमें वायुसेवनके लिये निकले । अकस्मात् मेह बरसने लगा । इन्होंने फल बेंचने वाली एक बुढ़ियासे छाता उधार मांगा । उसने इनको न पहचानकर कहा कि तुम चाहो तो मैं अपना पुराना छाता तुम्हे देसकतीहूं परंतु मैं अपना नया छाता तुमतो क्या बरन राजकुमार (प्रिंसआफ वेल्स) तकको नहीं दूंगी । " दूसरे दिन बुढिया अपना टूटा छाता पीछापाकरभौंचकसी रहगई क्योंकि उसपर जो फीता लगा था उसमें 'युवराजकी सलाम' लिखा हुआ था ॥

श्रीमान्‌की एमेरिका, भारत और फ्रान्सयात्राका वर्णन पहले हुआहै । यूरोपके वर्त्तमान राजपुरुषोंमें इनके समान यात्राके प्रेमी और नहीं हैं । यद्यपि जर्मनीके सम्राट् और रूसके ज़ारने भी बहुत समय यात्रामें बिताया है परंतु इनकी यात्रानें अनेक जाति और धर्मके लोगोंमें परस्पर एकताका बीज बोया है इन्होंने उन्नीस वर्षकी उमरसे यात्रा करना आरम्भ किया था ॥

यूरोप और एमेरिका आदि सभ्य देशोंमें इनके समान प्राणका बीमा करानेवाला दूसरा नहीं है । न्यूयार्ककी एक बीमा कम्पनीका कथन है कि जिस दिन यह न होंगे सभ्य देशोंकी समस्त बीमा कम्पनियोंको इनके उत्तराधिकारीको १ करोड़ पौंड देना पड़ैगा । यह संख्या कुछ वर्ष पहले की है । अब बहुत

बढ़गया। आश्चर्यकी बात यह है कि अनुमान २० लाख पौंडसे भी अधिक द्रव्य इन्हें ऐसे लोगोंकी ओरसे विरासतमें मिला है जिनका नाम धाम इनको अब तक अविदित है। इनकी प्रजाप्रियताका यह अच्छा उदाहरण है॥

इनको अतिथि सेवा बड़ी प्रिय है। जो व्यक्ति इनसे मिलने जाता है वह प्रसन्न होकर लौटता है। उसके सत्कारमें दम्पति अपना काम काज छोड़कर लगे रहते हैं और सब प्रकारके प्रयत्नसे उसे प्रसन्न करते हैं। इनको खेती विद्या पर बड़ा अनुराग है। सैंड्रिगृहाममें ६०० एकड़ भूमिपर यह खेती करवाते थे और कभी २ किसानोंकेसे वस्त्र पहनकर उसे देखने जाया करते थे॥

जब पांच वर्षके थे आपने एक दिन एक कबरपर गीली मिट्टी डालदी। यह बात माताके पास पहुँचतेही उन्होंने फटकारा। दूसरे दिन आपने उस कबरके पास जाकर कहा कि-"मिस्टर बर्नार्ड (वह इसी व्यक्तिकी कबर थी) मुझसे हाथ मिलाओ और क्षमाकरो। माता कहती है कि तू बड़ा गधा है"॥

एक दिन आप इंग्लैंडके कुबेर लार्ड राथ्सचाइल्डसे बातें करते २ बोले कि आप लोगोंकी स्थिति मुझसे अच्छी है। यदि मैं लोगोंको हँसता हुआ न देखपडूं तो तुरंत समाचारपत्र पुकारने लगेंगे कि युवराज दुःखित है, थकगया है और जो लोग मुझे हँसता देखैं तो कहैंगे कि युवराज प्रसन्न है। इसका स्वास्थ्य अच्छा है। मैं किसी तरहके वस्त्र पहनूं उसकी भी पेपरोंमें रिपोर्ट प्रकाशित होगी। प्रयोजन यह कि मेरी हालचाल, मेरा किसीसे संभाषण, सलाम और बातचीतपर समाचार पत्र आँखें गाड़े रहते हैं। यहबात मुझे अच्छी नहीं लगती है इसलिये मैं साधारणस्थितिको पसंद करताहूं॥

सन् १८९६ ई० में ओक्सकी घुडदौडमें इनका घोड़ा दूसरे नंबरपर था। इसके लिये इन्होंने बहुतेरी शर्तोंमें प्रथम नंबर पायाहै। केवल दो बारकी शर्तोंमें इन्होंने ६४ हजारपौंड जीतेथे॥

इंग्लैंडके राज्यमें अबतक जितने प्रिंस आफ वेल्स हुए हैं उन सबकी अपेक्षा इन्होंने इस पदका अधिक उपभोग किया है। राज्य पातेही इन्होंने अपना स्वभाव बदला है। जिन इष्ट मित्रोंके साथ दिन रात उठन बैठन रहतीथी अब वे आवश्यकता विना नहीं आने जाने पाते हैं। और जो बुलायेजाते हैं उनसे बातचीत भी राजसी ढंगकी होती है। लार्ड बेरेसफोर्ड आपसे मिलने गयेथे उनका वैसाही श्रीमान्ने सत्कार किया जैसा एक नरेश अपने प्रतिष्ठित सेवकका करता है। कहनेकी अपेक्षा करदिखाना इन्हें अधिक पसंद है। इंग्लैंडके "मैनूचेस्टर गार्डियन" ने

२१ मार्च सन् १९०१ ई० को लिखाहै कि श्रीमान्‌ने एक मित्रसे कहाकि "आप जानते हैं कि मैं व्यावहारिक मनुष्य हूं और कामसेही अपना मतलब रखता हूं"। आप इसबातको सत्यभी कररहे हैं । ट्रांसवाल युद्धके विषयमें मंत्रिमंडलके भरोसे न रहकर लार्ड किचनरसे लंबी २ रिपोर्टें मँगाना और उनपर विचार करना इसबातका उदाहरण है ॥

अध्याय ८.

श्रीमान्‌के अधिकार और शक्ति।

लंडनके 'सेंट जेमुस गेजेट' में मिस्टरमी नामक एक व्यक्तिने बहुत ही चित्ताकर्षक लेख प्रकाशित किया था। उसमें लिखा है कि–"इंग्लैंडका राज्य उस प्रकारका है जिसमें प्रजा और राजाका समान अधिकार है। यह बात केवल कहने सुननेकी नहीं है किन्तु वास्तवमें इसमें प्रजातंत्रका प्रयोग है। एकसौ बीस वर्ष पहले इंग्लैंडकी कामन्स सभामें एक प्रस्ताव हुआ था। उसका आशय यह था कि "राजाका अधिकार बढ़गया और दिन २ बढ़ता जाता है। इसे कम करना चाहिये।" यह उस समयकी बात है जब यहां एक पागल राजाका राज्यथा और वह साम्राज्यको नष्ट कररहाथा। सप्तम एडवर्डकी शक्ति घटाने की कामन्स सभाको सत्ता नहीं है क्योंकि यह बात राजाकी शक्ति घटनेपर निर्भर नहीं है जैसी कि उसकी बुद्धिपर है। संसारमें यह बड़े आश्चर्यकी बात है कि ब्रिटिश साम्राज्य एकहीं विचारपर चलरहा है। वह विचार प्रजातंत्र है। इस आश्चर्यदायिनी वस्तुको किसीने देखा वा सुना नहीं है क्यों कि वास्तवमें यह कोई पदार्थ ही नहीं है। यदि सप्तम एडवर्ड प्रधान अमात्यसे इस प्रजातंत्रके लेखोंकी नकल मांगें तो वह नहीं देसकता है क्योंकि सैकडों वर्ष से ब्रिटिश लोगोंके चित्तमें ये विचार भरे रहनेके अतिरिक्त कोई वस्तु नहीं है। इसमें ब्रिटिश विचार, ब्रिटिश अनुभव, आवश्यकता और योग्यताका समावेश है। यदि कोई देवता अपनी अपूर्व शक्तिसे तीस पीढ़ीमें योग्य अंगरेजको तैयार करै तो उसका परिणाम यही ब्रिटिश प्रजातंत्र होगा। यही अद्भुत अवर्णनीय पदार्थ हमारा शासन करता है। राजा इसका एक भाग है जो भी और भागोंकी तरह वर्णन करनेकी शक्तिसे बाहर है। यह कहीं नहीं लिखा है कि राजा क्या २ कर सकता है और क्या नहीं कर सकता। इस बातका आधार कामपर है और कार्यका निर्वाह ठीक हो रहा है। मंत्रिमंडल और पार्लियामेंटके मेंब-

रोंकी शक्तिकी सीमा है किन्तु राजाकी शक्ति असीम है। सप्तम एडवर्ड राज्य नियमोंका भंग किये विना राज्यको अस्त व्यस्त कर सकते हैं। यदि लार्ड सेल्बोर्न (जलसेना विभागके मंत्री) कलके पत्रोंमें पढ़ें कि राजाने समस्त सैनिक जहाज़ोंको बेंच डाला तो उन्हें आश्चर्य होगा परंतु इस कार्यसे प्रजा तंत्रका भंग न होगा। वह हमारी समस्त जल सेनापर सर्वोच्च अधिकार रखते हैं और प्रत्येक जहाज़ और तोपको दे सकते हैं। वह चाहें तो समस्त जहाज़ोंको किसीकी भेंटकर सकते हैं और लार्ड राबर्ट्ससे लेकर साधारण सैनिक तकको तथा राज्यके सिविलियनको पदच्युत कर सकते हैं। सेनाको नौकरीसे अलग करना उनके अधिकारमें है। युद्धके समयमें राजा पूर्णाधिकारी है। वह राज्यके प्रत्येक शक्तिमान् मनुष्यको सेनामें भरती होनेपर बाध्य कर सकता है। वह जनरलोंकी आज्ञाओंको लौट सकता है और समस्त जल तथा स्थल सेना पर उसका पूर्णाधिकार है। वह चाहे जिस देशसे युद्धकर सकता है और कैसी भी हानि क्यों न हो जब चाहे संधि करनेका उसे अधिकार है॥

आईनमें उसकी सबसे अधिक शक्ति है। उसके हाथसे कभी अनुचित कार्य होताही नहीं है। वह गिरजोंका स्वामी है और प्रधान पादरियोंको नियत करनेका उसे अधिकार है। आईनके अनुसार वह प्रत्येक न्यायालयमें उपस्थित है और वह चाहे जिस अपराधीको बंधमुक्त कर सकता है। वह पार्लियामेंटमें सदाही उपस्थित माना जाता है और दोनों सभाओंके पास किये हुए किसी बिलको वह अस्वीकार कर सकता है। वह चाहे जिसको चाहे जैसी उपाधि दे सकता है। किसीको यह अधिकार नहीं है कि उसकी इच्छाके विरुद्ध उपाधि लेनेसे नाहीं करे। वह जिसे मंत्री बनाना चाहे बनानेका उसे अधिकार है। राजा विना कोई भी आईन पूर्ण नहीं होता है। वह राज्य, धर्म, आईन और सेनाका मुखिया है। वही केवल शीशेका सिक्का चला सकता है। वह चाहे जैसी संधिको तोड़ सकता है। किसी राजदूतको पदच्युत कर सकता है और ब्रिटिश राज दूतोंको यूरोपके किसी राज्यसे बुला सकता है॥

परंतु राजाकी शक्तिकी भी सीमा है। वह सैनिक धूमपोतोंको बेच सकताहै पर प्रजाके द्रव्यसे पार्लियामेंटकी आज्ञाविना एक पाई भी खर्च नहीं कर सकता है। वह किसी नवीन पदको निर्माणकर उसकी फीस नहीं नियतकर सकता। वह अपराधीका अपराध क्षमा करसकता है परंतु किसीको दंडित

नहीं करसकता । आईनके विरुद्ध ढिंढोरा फेंरनेकी उसमें शक्ति नहीं है । यद्यपि वह प्रत्येक मनुष्यको शस्त्रग्रहण करनेकी आज्ञा देसकता है किन्तु किसी सिवि-लियनको राज्यसे निकालनेकी उसमें शक्ति नहीं है । उसमें मनुष्यका अपराध क्षमा करनेकी शक्ति है परंतु न्यायालयसे दण्ड मिलनेसे पूर्व उसे नहीं छुड़ा सकता है । यद्यपि उसमें किसी जजका फैसला मुलतवी करनेकी शक्ति है किन्तु वह जजके काममें हस्ताक्षेप नहीं करसकताहै । रानी एलिज़ाबेथकी तरह किसी मनुष्य को कामन्स सभासे निकाल नहीं सकता है । युद्धके समय राजाकी शक्ति अपरिमित है किन्तु शांतिमें वह एक इंच भी किसीकी भूमि नहीं छीन सकता है । राज्यभरमें वही एक व्यक्ति है जिसमें अपराधीको पकड़ने की शक्ति नहीं है । राजा कोई कार्य अनुचित नहीं करता है, वह सब आईन से मुक्तहै इसलिये उसपर कोई चार्ज नहीं लगाया जासकता है । यदि राजाने किसी मनुष्यको पकड़ा और वह निरपराधी प्रमाणित हुआ तो राजाके ऊपर उसे अकारण कैदकरनेकी नालिश नहीं होसकतीहै । बस इसीलिये राजा किसीको पकड़ नहीं सकता है ॥

राजाकी अनंत शक्ति हमपर प्रभाव नहीं डालसकतीहै । हमपर केवल विचारही शासन करताहै कोई आईन नहीं करता है । और वह विचार वहींहै जिसे हम बनाते हैं । यह विचार दीर्घकालसे चला आता है और इसीने चालीस करोड़ प्रजाको संयुक्त कररक्खाहै " ॥

अध्याय ९.

राज्यासनपर विराजना ।

श्रीमती महारानी विक्टोरियाके स्वर्गवासका वृत्तान्त उनके चरित्रके अध्याय ६२ में लिखा है । २३ जनवरीको विंडसरसे चलकर दिनके एकबजे दशमिनटपर श्रीमान् युवराज (प्रिंसआफ़्वेल्स) की सवारी लंडन पहुंची । विक्टोरिया स्टेशन से बकिंगहाम राजमहलतक भीड़के मारे शरीर छिलताथा । कहीं तिल रखने की जगह नहीं मिलती थी । युवराजको राज्यासनपर विराजनेके लिये पधा-रते देखकर प्रजाने नवीन राजाकी जयमनाई । स्टेशन पर ड्यूकआफ़् आर्गाइल, और मिस्टर बालफ़ोरने आपका स्वागत किया । उनकी गाड़ीमें ड्यूक आफ़् यार्क और दूसरीमें ड्यूक आफ़् कनाट विराजमान थे । जिधर होकर श्रीमान् की सवारी गई प्रजाने टोपियां उतार २ कर आपका जयघोष किया । श्रीमान्

ने योग्यरीतिपर सब लोगोंकी सलामका उत्तर दिया। श्रीमान्‌की सवारी भीडको चीरती हुई जब सेंटजेम्सके महलमें पहुंची सेनाने आपकी सलामी ली। प्रिवी कौंसिलके महलमें अनुमान दोसौ मनुष्य निमंत्रित थे। उपस्थित महाशयोंने लेवी दरबारके वस्त्र पहनरक्खे थे और आपका ड्रेस सैनिक था॥

कौंसिलके प्रेसिडेंट ड्यूक आफ् डेवन्शायरको श्रीमतीकी मृत्यु और उनके पुत्रकी गादीके समाचार सुनाये गये। उन्होंने श्रीमान्‌के सिंहासनासीन होनेका ढिंढोरा पढ़कर सुनाया। इसका आशय आगामि अध्यायमें लिखा गया है। ढिंढोरा पढ़ा जानेबाद उसपर ड्यूक आफ यार्क, ड्यूक आफ् कनाट्, राजकुमार क्रिश्चियन, ड्यूक आफ् केम्ब्रिज्, केंटरबरीके प्रधान पादरी, लार्ड चैंसलर और लार्ड मेयरने हस्ताक्षर किये। इस ढिंढोरेके अनुसार युवराज प्रिंस आफ वेल्सको इंग्लैंडके राजा एडवर्ड सप्तम और भारत वर्षके सम्राट्‌की उपाधि मिली। इसके बाद इस ढिंढोरेकी खबर श्रीमान्‌के पास जो उसी महलके एक अलग कमरेमें थे पहुंचाई गई। इस पर श्रीमान्‌ने शपथ खाये॥

आपके शपथ खानेके अनन्तर श्रीमान्‌का व्याख्यान जिसका आशय आगामि अध्यायमें है सुनाया जा चुकनेपर कौंसिलके मेंबरोंके शपथ खानेकी पारी आई। इस कार्यकी समाप्ति हुई तब लोगोंने आपके हाथका चुंबन किया। समस्त कार्यमें एक घंटा लगा। कार्य पूरा हो चुकने बाद राजाकी सवारी सेंट जेम्सके महलसे लौटकर मार्ल बारो हाउसको गई॥

जो २ कार्य प्रथम दिन सेंट जेम्सके महलमें हुए थे वही दूसरे दिन टेम्पल बार और रायल एक्सचेंजके आफिसमें हुआ। दोनों जगह हर्षके बाजे बजाये गये और प्रजाने एक स्वरसे पुकाराः—

"ईश्वर राजाको चिरंजीवी करै"॥

लंडनके लार्ड मेयरने इस उत्सवपर उपस्थित महाशयोंको भोजन कराया। ...की ओरका प्रतिज्ञापत्र और सम्राट्‌का ढिंढोरा जैसे लंडनमें पढ़ागया उसी ...श्रीमान्‌के साम्राज्यके समस्त बड़े २ नगरोंमें पढ़ा गया और ईसाइयोंने ...की मंगल कामनाके लिये गिरजोंमें नमाजें पढीं॥

...के पट्टाभिषेकका उत्सव आगामि जून मासमें होनेवाला है। इसके लिये ... अभीसे तैयारियां होरही हैं प्रबन्ध और कार्यकी व्यवस्था करनेको ... ...मरावोंकी एक सभा नियत हुई है। और इस उत्सवपर श्रीमान्

की ओरसे जो आज्ञापत्र प्रजाको सुनाया जानेवाला है उसके संशोधनका विचार होरहा है । ईश्वर इस शुभ अवसरको शीघ्र लावै और महाराजका कुशल मंगल बनारहै यही हमारी प्रार्थना है । यहभी सुनाजाता है कि इस उत्सवपर भारतवर्ष के कईएक राजा महाराजा लंडन जाना चाहते हैं ॥

अध्याय १०.

भारत में उत्सव और ढिंढोरा ।

जिसतरह भारतवर्षमें श्रीमतीमहारानी विक्टोरियाके स्वर्गवास होनेपर शोक हुआ उसीतरह श्रीमान् सप्तम एडवर्डके सिंहासनासीन होनेका देशव्यापी हर्ष भी हुआ । भारतके बाइसराय लार्डकर्जन ने २६ जनवरी को इस विषयकी सूचना देनेके लिये स्टेटसेक्रेटरी लार्ड ज्यार्ज हैमिल्टनको तार दिया था जिसका आशय यह है कि–" श्रीमतीमहारानीकी मृत्युके सम्बादसे भारत गवर्नमेंटको अतीव शोक हुआ । भारतके प्रत्येक भागके राजा और प्रजाकी ओरसे शोक और दुःखके निरंतर समाचार आरहे हैं । गवर्नमेंट राजा और प्रजा संयुक्त होकर महारानीके लिये शोक करते हैं । उनके लिये यहां के लोगों की इतनी बढ़कर पूज्यबुद्धि है जितनी पहले किसी राजाके लिये नहीं थी । उनपर प्रजाकी भक्ति प्रेमसे मिलीहुई है । लोगोंका कथन है कि देशने केवल महारानीको ही नहीं खोया है बरन देशभर की माताका देहान्त होगया है । सब जाति और धर्मकी प्रजाकी ओरसे मैं आपको इन बातोंके लिये विश्वास दिलाता हूं और श्रीमान्के सिंहासनासीन होनेपर सन्मानपूर्वक शुभाशिष देताहूं । " इसतारका उत्तर सेक्रेटरी आफ स्टेटने २९ जनवरी को यह दिया कि " आपने भारतगवर्नमेंट, राजा और प्रजाकी ओरसे मेरे द्वारा श्रीमान् सम्राट्‌ की सेवामें जो तारदिया उसका उत्तर देनेकी श्रीमान् ने मुझे आज्ञा दी है कि आपके तारमें भारतवर्षकी प्रजाकी ओरसे जो प्रेम और राजभक्ति प्रकाशित हुई है उसे मैं स्वीकार करता हूं । उनके दीर्घ काल तकके शासनमें सुकीर्तिका कारण उनकी बुद्धिमता, सुन्याय और प्रजाके सुखके अतिरिक्त और नहीं है । श्रीमती मृत्युपर देशव्यापी शोकको देखकर मेरे हृदयपर बहुत प्रभाव हुआ है । मेरे सिंहासनासीन होनेपर भारतके राजाओं और प्रजावर्ग ने जो मुझे शुभाशिष दिया उसे मैं अंतःकरणसे स्वीकार करताहूं और चाहताहूं कि मेरी इच्छा उनपर प्रकाशित कीजाय । मैंने उनके देशको देखा है और मेरे सिंहासनके

लिये उनकी जो भक्ति है उसपर मेरा पूर्ण विश्वास है । उनकी उन्नति और सुख में मेरा सदाध्यान और सम्बन्ध रहैगा" ॥

इसके सिवाय आपके सिंहासनासीन होनेके लिये भारतवर्षके प्रत्येक नगर में सभायें हुई । देशी रजवाड़ोंमें और जहां २ सरकारी तोपखाने हैं वहां १०१ तोपें सलामी की दागीगई । और देशभरमें भिन्न २ जाति और धर्मके लोगों ने अपने २ नगरोंमें इकट्ठे होकर सार्वजनिक सभायेंकर आपको गवर्नमेंट द्वारा बधाई दी । जिसतरह सिंहासनासीन होनेके दिन लंडनमें ढिंढोरा जिसका वर्णन इस चरित्रके अध्याय ९ में है सुनाया गया था उसीतरह भारत वर्षके प्रधान २ नगरोंमें सुनायागया । बम्बई के टौनहालमें नगरके शेरीफ मिस्टर जेम्स मैकडानेल्डने सीढ़ीपर खड़े होकर उच्चस्वरसे प्रथम निम्न लिखित प्रतिज्ञा पत्र सुनाया ॥

"पवित्र और प्रशंसनीय स्मारकको छोड़ जानेवाली हमारी गत साम्राज्ञी रानी विक्टोरियाको सर्वशक्तिमान् जगदीश्वरने अपनी सेवामें आमंत्रित करलिया । उनके स्वर्गवास होनेसे ग्रेट ब्रिटन और आयर्लैण्डका राज्य बिलकुल और स्वत्वानुसार उच्च और शक्तिशाली राजकुमार एलबर्ट एडवर्डको मिला है इसलिये हम इस राज्यके पारलौकिक और इहलौकिक लार्ड श्रीमती स्वर्गवासिनीकी प्रिवी कौंसिल, अन्य २ मुख्य गुणवानों और लंडनके नागरिकों तथा लार्डमेयर और एल्डरमेनकी सहायतासे एक स्वरसे जिह्वा और हृदयकी संयुक्त प्रेरणासे प्रकाशित करते हैं कि हमारी स्वर्गबासिनी रानीकी, जिनका स्मारक आनन्द दायक है, मृत्युसे सर्वोच्च और परमप्रतापी राजकुमार एलबर्ट एडवर्ड परमेश्वर की कृपासे हमारे राजा सप्तम एडवर्ड हुए हैं । यह ग्रेट ब्रिटेन, और आयर्लैंडके राजा, धर्मके प्रथमरक्षक और भारतवर्षके सम्राट् हैं । इनकी, सत्यता और शुद्धान्तःकरणसे आज्ञापालन करना हम स्वीकार करते हैं । और परमेश्वरसे जिसकी इच्छासे राजा और रानी शासन करते हैं, प्रार्थना करते हैं कि हमारे महाराज सप्तम एडवर्ड हमारे ऊपर आनन्दपूर्वक बहुत वर्षोंतक शासन करते रहैं । सेंटजेम्सके कोर्टमें हमारे प्रभुके सन् १९०१ ई० की २३ जनवरी को दियागया ॥

इस प्रतिज्ञापत्रको सुनानेके अनन्तर उक्त शेरीफने सम्राट्का ढिंढोरापढाः—

" श्रीमानो, लार्डो और भद्रपुरुषो, आजका अवसर बड़ादुःखदायक है । से अवसरपर संभाषण करनेका मुझे यह प्रथमही अवसर है । मेरी प्रियमाता

रानीकी मृत्युको आपके समक्ष प्रकाशित करना मेरा प्रथम और शोकजनक कर्तव्य है। मैं जानताहूं कि आप समस्त जाति, और मैं जहांतक सोचताहूं भूमंडलभर इस अमिटहानिपर अंतःकरणसे मेरे साथ सहानुभूति करते हैं। अब मेरे ऊपर जो भारी बोझा आपड़ाहै उसके निर्वाह करनेमें मैं उनके मार्गपर चलनेका प्रयत्न करता रहूंगा। यही मेरा निरंतर उद्देश्य होगा। मैंने दृढ निश्चय करलिया है कि जबतक मेरे शरीरमें प्राण रहैगा मैं राजनियमोंका पालक प्रजातंत्र राजाहूंगा। और प्रजाकी भलाई और उसके सुधारके लिये कार्यकरता रहूंगा। मैं सप्तम एडवर्ड के नामसे, जोनाम मेरे पूर्व छः राजा धारणकर चुके हैं प्रकटहोना निश्चय करताहूं। ऐसा करनेमें मैं अपने सदा शोक करने योग्य बृहत् और बुद्धिमान् पिताके, जो सार्वजनिक सम्मतिसे उत्तम कहलाने योग्य थे, नामका मूल्य नहीं घटाता हूं और चाहताहूं कि उनका नाम सदा स्वतंत्र रहै। अंतमें मैं पार्लियामेंट और ब्रिटिश जातिको विश्वास दिलाताहूं कि वे मेरे कठिन कर्तव्यमें, जो अब मुझको विरासतमें मिलाहै और जिसके लिये मैं जन्मभरके लिये अपनी समस्त शक्ति को संलग्न करताहूं, सहायक होंगे"।

इसके सुनाने बाद महारानीकी मृत्युसे जो झंडा गिराया गया था उसपर युनियन जैक (राजचिह्न) चढ़ाकर खड़ा करादिया गया। इसके सिवाय भारत वर्षके राजा और प्रजाका समाश्वासन करनेके लिये विंड्सर राजमहलसे ४ फरवरी सन् १९०१ ई० को एक पत्र लिखकर प्रकाशित करवाया। उसमें भारतकी प्रजाको " मेरी प्रजा " के नामसे संबोधन किया है। उस पत्रमें लिखाथा किः—

"मेरी प्यारी और प्रेमपूर्वक स्मरण रखने योग्य माताकी मृत्युसे मैं, इस सिंहासनपर, जो मुझे विरासतमें मिलाहै, आसीन हुआहूं। भारतवर्षके राजा और प्रजासे मैं सलाम करताहूं और उन्हें विश्वास दिलाताहूं कि मैं उनके आनन्दका इच्छुकहूं। मेरी प्रसिद्ध पूर्वाधिकारिणी भारतवर्षकी प्रथम शासन कर्त्री थी। उन्होंने भारतबर्षका प्रबंध अपने हाथमें लियाथा और उन्हींने महारानींकी उपाधि धारण की थी। भारतके विषयमें वह बहुतही ध्यान देती रहीं थीं। मैं अच्छी तरह जानताहूं कि भारत वर्षकी करोड़ों प्रजा इस सिंहासनकी परम भक्त है। दक्षिण एफ्रिकाके युद्धमें देशीराजाओंने और समुद्रपारके देशोंमें देशी वीर सेनाने महारानीके अंतिम वर्षमें इस भक्तिको प्रमाणित कर दिया है। मैं

उन्हींकी आज्ञा और इच्छासे भारतके राजा और प्रजाके साथ स्वयं परिचय पाने के लिये भारतका दर्शन कर चुकाहूं । वहांपर मेरे चित्तमें भारतके विषयमें जो प्रेम अंकित हुआहै उसे मैं कभी नभूलूंगा । और भारतकी भलाईके विषयमें मैं सदा अपनी माताके समान चलूंगा । और उसकी अचूक राजभक्ति और प्रेमका सदा आदर करूंगा ॥ एडवर्ड आर. आई."

अध्याय ११.

श्रीमान् की उपाधियां और वेतन ।

सिंहासनासीन होने पूर्व श्रीमान् ग्रेट ब्रिटेन और आयर्लैंडके संयुक्त राज्यके प्रिंस आफ वेल्स, सेक्सनीके ड्यूक, सैक्सको बर्ग और गोथाके प्रिंस, स्काट लैंडके ग्रैंड स्टुआर्ड, कार्न वाल और राथसीके ड्यूक, चेस्टर, और डबलिनके अर्ल और आइल्सके लार्डके अतिरिक्त केजी., के. टी., जी, सी. बी., जी. सी. एस्.आई., जी सी. एम्. जी., सी. आई. ई. और पी. ओकी उपाधिसे भूषितथे । वह श्रीमतीके शारीरिक एड् डी कैंप, सेनाके फील्ड मार्शल, प्रथम और द्वितीय लाइफ गार्ड सेना तथा रायल हार्स गार्डस्के मुख्य कर्नल, दशम-हसार्स सेनाके कर्नल, केम्ब्रिज और आक्स फोर्ड विश्वविद्यालयकी सेनाके कर्नल, मिडलसेक्स सिविलसर्विस कोर, गार्डन हाइलैंडर्स की तीसरी बेटालियन और सदरलैण्ड हाइलैण्ड राइकल वालंटियर्स सेनाके कर्नल, जलसेनाके एडमिरल हैं। इसके अतिरिक्त जर्मनसेनाके फील्डमार्शल और पांचवीं पामेरेनियन ब्लचर हसार्सके मुख्य कर्नल भीहैं । उनको आस्ट्रिया और हंगेरी राज्यने बारहवीं हसार्स रेजिमेंटके कर्नलकी उपाधिदीहै । इन उपाधियोंमेंसे प्रिंस, ड्यूक और श्रीमतीके एड् डी कैंपका पद तो इनके सिंहासनपर विराजनेसे अब इनके लिये नहीं रहा किन्तु और २ पदवियां ज्योंकी त्यों बनी हैं ॥

श्रीमती महारानीको गवर्नमेंटसे कुल वार्षिक वेतन ३ लाख ८५ हज़ारपौंड मिलताथा । इसमें ६० हज़ार पौंड निजखर्चका, १ लाख३१ हज़ार २६० पौंड नौकरोंके वेतनका १ लाख ७२ हज़ार घरूखर्चका और १३ हज़ार पौंड दाना-दिके लिये नियत था इसके सिवाय ८ हजार ७४० पौंड अलल हिसाब था । इंग्लैंडकी पार्लियामेंटने वर्त्तमान सम्राट्को महारानीके वेतनसे १ लाख ८०

हज़ार पौंड अधिक देना निश्चय कियाहै । इसहिसाबसे सब मिलाकर पौने छः लाख पौंड वार्षिक आपको सरकारसे मिलाकरैगा । एक यूरोपियन महाशयने "पायोनियर" में प्रस्ताव कियाहै कि श्रीमान्‌को भारतवर्षके कोष और राजाओंसे भी कुछ मिलना चाहिये परंतु अभीतक इसविषयमें गवर्नमेंटकी कुछ सम्मति विदित नहीं हुई । यहभी सुनागयाहै कि श्रीमतीके पास जो भारतवासी सेवक थे उनको योग्य पुरस्कार देकर भारतको लौटा दिया गया है ॥

अध्याय १२.

श्रीमान्‌को आशीर्वाद ।

श्रीमान् सम्राट् सप्तम एडवर्डका शासनारंभ होगया है । राजरीतिके अनुसार आप सिंहासनपर भी विराजगये हैं किन्तु अभीतक ईसाईधर्मके अनुसार राज्याभिषेकका उत्सव होना शेष है । उसका मुहूर्त्त आगामि जूनमासमें स्थिर हुआ है । ईश्वरसे प्रार्थना है कि वह उत्सव हमें शीघ्र दिखावै । केवल वही उत्सव क्यों बरन श्रीमान्‌के पौत्रका विवाह और पुत्र पौत्रके संतानकी वृद्धि देख कर हम भारतवासी आपको अंतःकरणसे बधाई दें यह मेरा आशीर्वाद है । ईश्वर आपको अपनी माताके समान दीर्घकालतक शासन करनेकी शक्ति प्रदानकरै और आपके राज्यमें समस्त प्रजा सुखपावै यह मेरी ईश्वरसे प्रार्थना है । आपने भूमंडलके प्रायः समस्त देशोंकी यात्राकी है, समय २ पर राज्य प्रबंधके कामोंमें संयुक्त होकर और सदा श्रीमतीके शासनको निरीक्षणकर इस कार्यका अनुभव प्राप्त किया है । इस चरित्रको पढ़नेसे विदित होता है कि आपमें माताके समान गुण विद्यमान हैं । संतान माता पिताके स्वभावकी छाया होती है । आप श्रीमतीका दूसरा स्वरूप हैं । आपसे भारतवर्षका अधिक कल्याण होनेकी आशा है । श्रीमतीके शासनमें भारतकी प्रजाने बहुत सुख पाया था किन्तु वह कभी इस देशका दर्शन न कर सकी थीं, आप भारतकी सैर करचुके हैं, वह सर्वोत्तमा होनेपरभी स्त्री थीं, आप उनके गुणोंको धारण करनेके अतिरिक्त एक गुण अधिक रखते हैं । वह गुण यही है कि आप पुरुष हैं । स्त्री की अपेक्षा पुरुषका प्रभाव स्वभावसे ही अधिक होता है । आपने अपनी धार्मिक मातासे धर्म संबंधी शिक्षा पाई है और भारतवर्षको धार्मिक शासक ही अभी-

ष्ट है । आप धर्म के विषयमें पक्के ईसाई होनेपर भी यहूदियोंपर दयाकर अनेक बार प्रकाशित कर चुके हैं कि न्यायमें आपको भिन्न धर्मवालोंका आदर है । इन बातोंको देखकर मुझे कहनेका साहस है कि आप जैसे उज्ज्वल सुवर्णमें सुगंध मिली है । ईश्वरकी कृपासे अभागे भारत को ऐसा शासन नसीब हुआ है । ईश्वर आपको चिरंजीवी करै । आपके परिवारकी वृद्धि हो और आप दीर्घ कालतक प्रसन्न रहकर देशी विदेशी प्रजाके सुखकी वृद्धि करैं । और सदा हम लोग नीचे लिखा वाक्य रटते रहैं ॥

" चिरंजीवी रहो एडवर्ड नृप "।



महारानी विक्टोरियाका चरित्र
समाप्त.

॥ श्रीः ॥

शुद्धिपत्र ।

अशुद्ध.	शुद्ध.	पृष्ठ.	पंक्ति.
इस		१	६
बाजना	बजना	१	७
उन्होंने	सबने	१	१४
१९ जनवरी	२९ जनवरी	६	नोट
बापतिस्मा	बतिस्मा	७	१,५,८
शिखाने	सिखाने	८,९,१५,२५	११-१६,१२,१८
पति	पिता	८	१७
चाहताथा	चाहतेथे	८	२३
उसके	उनके	८	२३
जार्ज	ज्यार्ज	९	३,४
आया उसने	आये उन्होंने	१३	२४
लगा	लगे	१३	२५
कर गया था	कर गये थे	"	२६
मझे	मुझे	१५	३१
गडिया	गुड़िया	"	"
हो इन लाइलेन बर्ग	होइन लाइलेन बर्ग	१७	१८
मिसजेन	मिसजेन थी,	१८	८
को पड़दा	का परदा	२१	१६
जवाबदारी	जवाबदिही	२२	१९
रावी	एवी	२४	२०
करना	करै	२५	२३
मढा	मढ़ा गया था	२६	९
करना	कीजाय	३३	१७
देना	दियाजाय	"	"
आट्टालिका	अट्टालिका	३४	१०
दुविचारों	दुर्विचारों	"	१३

शुद्धिपत्र ।

अशुद्ध.	शुद्ध.	पृष्ठ.	पंक्ति.
दिखाने	दिखाते	३६	२२
आपके	आपको	४०	१४
श्रीमती	श्रीमतीने	"	३१
चहिये	चाहिये	४९	६
रानीसे	रानीपर	५१	१०
उठगया	विश्वास उठगया	५२	१
सहचरियों	सहचरियां	"	३१
स्वामीनी	स्वामिनी	५३	८
का हुए	के हुए	५४	१२
शद्वों	शब्दों	५९	४
उठा। वैं तौ	उठावैं तो	"	२५
आप	आपा	"	२८
सिज	जिस	"	३१
खुले	खुलनेपर	६०	२९
जो दिन रात	दिन रात	६१	१८
मेरी	मेरे	६३	४
वाछते	वा छतें	६४	१७
मंढाथा	मंढ़ा गया था	६७	२२
वार	वर	"	२८
इनके लिये	इनको लिये	७०	१
पुरुषोचित	पुरुषोचित	७२	१७
रानीने	रानीसे	"	२०
प्रजासे	प्रजाने	७२	२०
दम्पत्य	दाम्पत्य	"	२५
कान्स्टीटयूशवल	कान्स्टीटयूशनल	७३	३०
शयनगृहकोजाल	शयनगृहकाजाल	७८	७
कैरेगा	करेंगे	८१	३५
शिखाती	सिखाती	८४	४
पतिभाईतो	पतितो भाईके	"	२९
स्थानो	स्थानोको	९१	१२

अशुद्ध.	शुद्ध.	पृष्ठ.	पंक्ति.
केम्ब्रिज	केम्ब्रिज	"	२६
पॅलेस	पेलेस	९५	२९
मोटा व	मोटाव	९६	८
नाकर	नौकर	"	२१
डयुक	ड्यूक	"	२८
वर्षक	वर्षके	९७	३०
बालंटियर	वालंटियर	९९	१८
बिलियम	विलियम	"	१७
सास्थ्य	स्वास्थ्य	१०२	१४
स्वाह	स्वाहा	१०७	६
जलभरने	जलमरने	"	९
जलक	जलका	"	१८
रहाथा	रहीथी	११४	७
हुआ	हुई	"	८
दौहित्रीको	दौहित्रीके	१२१	३
ग्रीसको	ग्रीसके	"	३
पात	पति	"	८
इटालीकी। यात्रा	इटालीकी यात्रा	१२९	११
रेहगी	रहै	१३३	२१
महरानी	महारानी	१३९	५
प्रेय	प्रेम	"	१८
आधात	आघात	"	२७
स	से	१४३	९
कम्पबैल	केम्पबेल	१४४	१८
अपनेको	उसे	१४५	२२
वइ	वह	१४६	२०
१८५१	१८५७	१४७	२१
नेरली	नेळली	"	२८
खेलकरने	खेलने	१५२	१
पधारींथी	पधारीं	"	२३

अशुद्ध.	शुद्ध.	पृष्ठ.	पंक्ति.
लेखिनी	लेखनी	१६१	१
छपाथा	छापाथा	१६३	२२
घहां	वहां	१६५	३
जबर	जब २	१६७	१६
धमधाम	धूमधाम	१६८	१५
घटनामें	घटनायें	१७४	२१
के प्रजाकी	की प्रजाके	१७५	२५
चाहत	चाहता	१७८	२९
आठ लाख	चार हज़ार	१७९	५
मेको नाटन	मैकनाटन	"	१६
पैंडूर	पैंड	१८	२
सत्व	०	१८१	१६
लौटफेरनहोगी	लौटफेरनहोगा	१८७	१
इंग्लैंडमें	इंग्लैंडके	१९१	२
एसो शियेशन	एसो सियेशन	१९३	६
प्रमाण	परिणाम	१९५	१०
आपने	अपने	१९६	८
संवादका	संवादको	१९८	१
दश	०	"	२४
रक्षामें	रक्षाके लिये	१९९	१८
बीबीपरबागमें	बीबीबागपर	२००	२७
निपटार करनेके	निपटारा करनेको	२०१	३०
तेहेरानके	तेहेरान	२०२	१
ईरानशाहनेके	ईरानकेशाहने	"	३
जो	०	"	२९
यूरोपियनोंकी	यूरोपियनोंको	२०४	१३
कारणोंको	कारणोंसे	१०६	१६
खाले	खोले	२१०	२
देतेथे	देतीथी	२१२	३
उनपर	उसपर	२१५	२७

अशुद्ध.	शुद्ध.	पृष्ठ.	पंक्ति.
करने	करना	"	२९
करने	करना	"	३०
लगाकर	लगायाजाकर	२१७	१३
केलेकर	को लेकर	२२१	१३
लिया	करालिया	२३२	१६
केपास	केनाम	२३८	१३
करता है	होताहै	२४०	१४
सकी	सका	२४५	५
हमीदको	सुलतान अबदुल हमीदको	२४६	५
हस	इस	२४७	२
होनेका	होनेके	२४९	२०
भारत वर्ष	भारत वर्षको	२५०	७
देतीरहै	देतेरहैं	"	१९
गवर्नरने	गवर्नर जनरलने	२५२	२५
बहाले	बहाल	"	२६
मिसरम	मिसरमें	२५३	९
बाजट	बजट	२५४	५
अंगरेज़ीकी	अंगरेज़ोंकी	"	३०
उसको	उनको	२५५	२५
सुकायों	सुकायौं	२५८	२
ग्लैडस्टनन	ग्लैडस्टनने	२५९	२५
खुब	खूब	२६२	२२
क्रुगर	क्रूगर	२६४	२८
देते	देने	२६६	८
मिसर	मिस्टर	२७१	९
लोन	लोनने	"	११
युद्धम	युद्धमें	"	३०
पहले२	पहले	२८०	२९
करो	करोड़	"	३०

शुद्धिपत्र।

अशुद्ध.	शुद्ध.	पृष्ठ.	पंक्ति.
बोट	वोट	२८४	२७
Uniuvrsal	Universa	२८५	१९
षिक्टोरिया	विक्टोरिया	२८६	२६
मगट्टला	मगडला	२८७	१०
चलानेम	चलानेमें	"	२८
वहा ही	वह ही	२८९	२१
आ	आठ	२९०	१
होत	होता	२९३	३०
सेक्सकोबग	सेक्स को बर्ग	३००	१४
औ	और	३०१	१३
बोला	बोल	"	१९
रेंड्र	रेंडू	३०२	१०
प्रिंस आफ् वेल्स	ड्यूक आफ् कार्नवाल	३०३	७
विल	बिल	"	१०
जीव	जी	३०८	६
बुरी	बुरा	३०९	३
कार्थ	कार्य	"	८
उनकी	उसकी	३१०	२९
यान	ध्यान	३११	१
उपस्थिति	उपस्थित	"	२३
पदको	पदकों	३१२	८
हुआ	हुए	३१७	२१
श्रीमती	श्रीमतीकी	३१८	२६
से	ऐसे	३१९	३०
राइकल	राइफल	३२१	१५
जलसेनाके	और जलसेनाके	"	"

इति

॥ श्रीः ॥

विक्रय्यपुस्तकें–क़िस्सा–कहानी।

नाम.	की. रु. आ.
सिंहासनबत्तीसी	०–७
बैतालपच्चीसी	०–४
शुकबहत्तरी	०–६
हातिमताईका किस्सा	१–४
मोहिनीचरित्र (फिसानाअजायब क़िस्सा)	०–८
त्रियाचरित्र (कलियुगी स्त्रियोंके अनेक छलछिद्र और उनसे बचनेका उपाय)	०–८
चहारदरवेश (बागोबहार) बुद्धिचमत्कार करनेवाला चार योगियोंका वृत्तांत	१–०
बीरबलविनोद २०७ चुटकुले बीरबलका जीवन चरित्र समेत (उदासीन दशामें भी पढ़नेसे हँसपडोगे)	१–४
गुलबकावली (कथारसीली विस्तारित अनुवाद)	०–१०
वीरेन्द्र उपन्यास (वाक्यरचनारोचकहै)	०–२
शवागारशोकोक्ति (अनूठा दृश्य है)	०–१
विचित्रस्त्रीचरित्र–स्त्रीकी छलछंदता	०–१०
झगड़ापंचक (पांच झगड़ा शिक्षारूप हैं)	०–२
कहावतकल्पद्रुम (अँगरेजी, हिन्दी, गुजराती, संस्कृत, फार्सी, मरहठी भाषाओंकी पुरानी कहावतैं मुख्य कथाओं समेत)	०–८
ठहरो–अर्थात् (उपदेशदर्पण) इसमें २०० शिक्षिक चुटकुलेहैं.....	०–५
गुलसनोबर का (दिलचस्प–क़िस्सा)	०–१०
चित्तविनोद (चाहेजैसे उदास चित्तहो इसे पढतेही हँसपडोगे)	१–०
राजकुमारीचन्द्रमुखी (उपन्यास)	०–५
सासपतोहू (गृहचरित्र देखो)	०–८
बड़ाभाई (सौतेली माताका सत्यानाश)	०–१०
दवी उपन्यास	१–०
अजबिलाश (देखो)	०–४

नाम.	की. रु. आ.
पतिपत्नी संवाद	०–४
दिल्लगीकी डबिया (प्रथमभाग)	०–२
तथा (द्वितीयभाग)....	०–२
लल्लाबाबू प्रहसन	०–२
वीरनारायण (ऐतिहासिक उपन्यास)	०–१॥

राजनीति ।

शुक्रनीति भाषाटीकासहित (राजप्रबन्ध नीति)	१–८
भर्तृहरिशतक भाषाटीका (नीति, श्रृंगार, वैराग्य)	१–०
चाणक्यनीति भाषाटीका दोहासहित जिल्द	०–८
पंचतंत्र मूल	१–८
पंचतंत्र भाषाटीका शिक्षा चातुर्यताकी सीढी	२–०
विदुरनीतिहिंदुस्थानी श्रीमहाराज धृतराष्ट्रको विदुरने उपदेश दिया है यक्ष प्रश्नोंके सह	०–४
विदुरप्रजागर राजनीति मारवाडीभाषा	०–८
विदुरप्रजागर राजनीति छंन्दबद्ध कविता देखनेही योग्य है	०–४
राजनीति पंचोपाख्यान भाषा	०–७
कुण्डलिया गिरिधररायकृत (सामयिक नीति वेदान्त संयुक्त) अबकी बार दूनी होगई है	०–५

भाषा–काव्य ।

रामरसायन रामायन–रसिकविहारीकृत	४–०
रसिकप्रिया सटीक	१–४
रामचंद्रिका सटीक कवि केशवदास प्रणीत	२–०
विज्ञानगीता केशवदासकृत (वेदान्त)	०–१०
काव्यनिर्णयभाषा छन्दबद्ध (भिखारीदासकृत) मनहरण छन्दोंमें कठिन (अलंकार) वर्णन	१–४
जगद्विनोद (पद्माकरकृत नायकाभेद)	०–६
रसराज (मतिरामकृत नायकाभेद)	४–६
व्रजविलास, बड़ा मोटेअक्षरका टिप्पणीसहित	४–०

नाम.	की. रु. आ.
ब्रजविलास मध्यमअक्षर टिप्पणी सहित विलायती जिल्द .... ग्लेज	२–०
तथा रफ् कागजका	१–८
ब्रजविलास छोटा अक्षर	१–०
ब्रजचरित्र (श्रीराधाकृष्णजीकी सर्वलीला सुगम दोहा चौबोलोंमें वर्णितहैं)	३–०
प्रेमसागर टाईपका बडा ग्लेज कागजका	१–१२
प्रेमसागर टाईपका बड़ा रफ्	१–४
भक्तमाला रामरसिकावली बड़ी, रीवाँधिपति महाराज रघुराजसिंहकृत अत्युत्तम छन्दबद्ध जिसमें चारोंयुगोंके भक्तोंकी भिन्न २ कथा हैं और द्वितीयावृत्ति उत्तर चरित्र समेत अत्युत्तम नई छपी है	४–०
रामस्वयंवर श्रीमहाराजारघुराजसिंहकृत (काव्यदेखनेयोग्य)	४–८
भक्तमाल नाभाजीकृत सटीक (छंदबद्ध)	१–४
रुक्मिणीपरिणय–महाराज श्रीरघुराजसिंहजूदेव प्रणीत	१–८
महाभारत भाषा सबलसिंहकृत—तुलसीदासजीकी रामायणकी रीतिसे दोहा चौपाईमें १८ अठारहोंपर्व	३–८
तथा प्रथम भाग (३–आदि, सभा, वनपर्व)....	१–०
तथा द्वितीय भाग (२–विराट, उद्योगपर्व)....	१–०
तथा तृतीय भाग (८–भीष्म, द्रोण, कर्ण, शल्य, गदा, सौप्तिक, ऐषिक, स्त्रीपर्व)	१–०
तथा चतुर्थ भाग (५–शान्ति, अश्वमेध, आश्रमवासिक, मुशल, स्वर्गारोहणपर्व)	१–०
विजयमुक्तावली (महाभारतका सूक्ष्मवृत्तांत छंदबद्ध)	१–०
अर्जुनगीता भाषा	०–४
गजेंद्रमोक्ष भाषा	०–१॥
शनिकथा कायस्थकी	०–१॥
शनिकथा राघवदासकृत	०–३
शनिकथा बड़ी पं० रामप्रतापजीकृत	०–८
रुक्मिणीमंगल बड़ा (पद्मभक्तकृत मारवाड़ी भाषा)	१–४
हनुमानबाहुक पंचमुखी कवच समेत	०–१॥
नासिकेतपुराण भाषा (स्वर्ग नरकका वर्णन)	०–६
नरसीमेहताका भामेरा बड़ा	०–५

नाम.	की. रु. आ.
बिस्मिलपरिवारका स्वांग (इश्कचमन)	०–८
सूर्यपुराणादि १९१ रत्न अतिउत्तम कागज और जिल्द बँधा	०–८
सूर्यपुराणादि १९१ रत्न रफ्	०–६
ज्ञानमाला	०–२
मंगलदीपिका अर्थात् शाखोच्चार	०–१॥
दम्पतिवाक्यविलास–जिसमें सब देशांतरकी यात्रा और धंधेके सुखको पुरुषने मंडन और स्त्रीने खण्डन किया है दोहा कवित्तोंसे (सुभाषित)	०–१२
रसतरंग ज्ञानभक्तिमार्गी अजब रँगीले पद्य कृष्णगढ़ महाराज प्रणीत	०–८
दादूरामोदय संस्कृत–दादू पंथी साधुओंको	०–१०
श्यामकामकेलि	०–४
परमेश्वरशतक	०–६
भक्तिप्रबोध	०–२
भावपंचाशिका कविवृन्दजीकृत	०–२
प्रेमशतक	०–४
मदनमुखचपेटिका भाषाटीका	०–४
प्रेमवाटिका भाषा (रोचक भजन)	०–२
हनुमत्पताका छन्दबद्ध (वीररसके रोचक कवित्त)	०–३
नामप्रताप छन्दबद्ध (श्रीरामनाममाहात्म्य)	०–१॥
शृंगारांकुर भाषा–छन्दबद्ध (रसकाव्य)	०–२
जगन्नाथशतक–इसमें रघुराजसिंह रीवाँधिपतिके बनाये हुए १०० कवित्त विनयके हैं	०–३
नैषधकाव्य मनहरण छन्दोंमें राजा नलदमयन्तीका सम्पूर्ण उदाहरणों समेत चरित्र	१–०
सुन्दरीतिलक (शृंगाररस के चुहचुहाते हुए कवित्त भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र संगृहीत)	०–६
विक्रमविलास (रोचक छन्दबद्ध)....	०–८
मसलानामा (मसलोंके उदाहरणमें शिक्षा वर्णन)	०–८
काव्यसंग्रह (प्राचीन रोचक कवित्त सवैया)	०–८